वंदनीय माता जी के जन्म के 100 वर्ष,अखण्ड दीप के प्राकट्य के 100 वर्ष एवं पूज्यवर की साधना के 100 वर्ष को समर्पित

स्मारिका

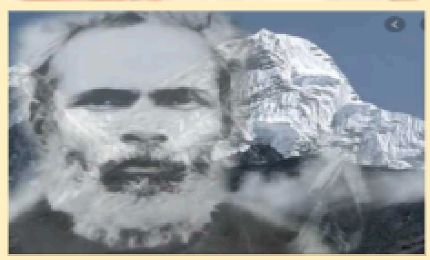

दो शब्द

इस स्मारिका पुस्तक में हमारा अपना कुछ भी नहीं है। इस संकलन में शामिल किया गया समस्त कंटेंट शांतिकुंज गायत्री परिवार का ही है।
वैरागी द्वीप स्थित शताब्दी नगर में हुई गतिविधियों की जानकारी जैसे-जैसे उपलब्ध होती गई, हम उसे इक्कठा करते रहे। परम वन्दनीय माता जी की जन्म शताब्दी,अखंड दीप के प्राकट्य की शताब्दी एवं परमपूज्य गुरुदेव की साधना की शताब्दी को समर्पित यह संकलन, वर्षों तक गायत्री परिजनों के लिए लाभदायक रहेगा।
जय गुरुदेव

निवेदन

इस स्मारिका में लेखन, वीडियोस और क्लिप्स का अति उत्कृष्ट कंटेंट संकलित किया है। समय निकाल कर, सम्पूर्ण श्रद्धा के साथ इस कंटेंट का अवश्य अमृतपान करें

इस कंटेंट में दिए गए वीडियो लिंक्स Clickable नहीं है, उन्हें Clickable करने के लिए इस पीडीऍफ़ को डाउनलोड करना होगा।

वर्ष 2026 अखिल विश्व गायत्री परिवार (AWGP) के इतिहास में एक पवित्र मील का पत्थर है। यह युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की श्रद्धेय आध्यात्मिक सहचरी एवं दिव्य शक्ति, वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा का जन्मशताब्दी वर्ष है। इस पृथ्वी पर उनके दिव्य अवतरण की शताब्दी के रूप में, जन्मशताब्दी 2026 केवल उनके भौतिक जन्म का स्मरणोत्सव नहीं, बल्कि उनके आदर्शों, उनकी मौन शक्ति और युग निर्माण योजना में उनके अद्वितीय योगदान का एक वैश्विक उत्सव है।
लाखों लोगों को निरंतर प्रेरित करने वाली जाग्रत चेतना की शाश्वत ज्वाला, अखण्ड ज्योति के देदीप्यमान मार्गदर्शन में, AWGP इस पूरे शुभ वर्ष में भारत और विदेशों में गहन आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित कर रहा है। ये पहल न केवल माताजी के जीवन और दृष्टिकोण को एक श्रद्धांजलि हैं, बल्कि मानव में देवत्व को जगाने का एक स्पष्ट आह्वान भी हैं।

वंदनीया माताजी: दिव्य शक्ति का मूर्त रूप:

माता भगवती देवी शर्मा युगऋषि के मिशन में केवल एक सहयोगी नहीं थीं, बल्कि वह नींव थीं जिस पर इस आध्यात्मिक पुनर्जागरण

के मंदिर का निर्माण हुआ। एक माँ की कोमलता और एक ऋषि के संकल्प के साथ, उन्होंने गायत्री मिशन को उसके प्रारंभिक वर्षों में पोषित किया। उनकी मौन तपस्या, अटूट विश्वास और निःस्वार्थ सेवा के आदर्शों के प्रति पूर्ण समर्पण ने उन्हें लाखों लोगों के लिए शक्ति और विनम्रता का एक शाश्वत प्रकाश स्तंभ बना दिया। उनके मार्गदर्शन से, दुनिया भर में अनगिनत महिलाएँ आध्यात्मिक मातृत्व की शक्ति के प्रति जाग्रत हुईं और उन्होंने समाज की नैतिक रीढ़ के रूप में अपनी भूमिका को अपनाया। उनका जीवन शक्ति-साधना का एक जीवंत ग्रंथ है, जो पीढ़ियों को आंतरिक प्रकाश के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

जन्मशताब्दी समारोह: एक राष्ट्रव्यापी जागरण:

इस दिव्य अवसर के उपलक्ष्य में, AWGP ने जन्मशताब्दी 2026 को आध्यात्मिक उत्थान, सामूहिक जागरण और सांस्कृतिक कायाकल्प के एक वर्षव्यापी आंदोलन के रूप में संकल्पित किया है। समारोह के मुख्य आकर्षणों में शामिल हैं:

ज्योति कलश यात्रा:

देश के कोने-कोने में पवित्र ज्योति कलश (आंतरिक प्रकाश और दिव्य ज्ञान का प्रतीक ज्वाला) की एक भव्य, राष्ट्रव्यापी यात्रा निकाली गई। प्रत्येक कलश को शांतिकुंज की अखण्ड ज्योति से प्रज्वलित किया गया और इसके साथ जुलूस, सत्संग और संकीर्तन किए गए। ये यात्राएँ चलते-फिरते मंदिरों के रूप में काम करती , जो दिलों और घरों में आध्यात्मिक उत्साह को फिर से जगाती रहीं।

सामूहिक गायत्री साधना एवं अनुष्ठान:

भक्तों और आध्यात्मिक साधकों से पूरे वर्ष सामूहिक गायत्री साधना, अनुष्ठान और यज्ञ करने का आह्वान किया गया। यह पवित्र

साधना न केवल माताजी के आदर्शों को श्रद्धांजलि देती बल्कि आध्यात्मिक स्पंदनों का एक शक्तिशाली क्षेत्र भी बनाती है जो पर्यावरण को शुद्ध करता है और सामूहिक चेतना को रूपांतरित करता है।

सामाजिक उत्थान अभियान:

वंचितों के प्रति माताजी की गहरी करुणा और एक न्यायपूर्ण समाज की उनकी दृष्टि के अनुरूप, विभिन्न समाज सुधार अभियान चलाए गए जो अनवरत चलते रहेंगे। इनमें शामिल हैं:

- महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम
- युवा चरित्र निर्माण कार्यशालाएँ
- स्वास्थ्य एवं स्वच्छता अभियान
- पर्यावरण जागरूकता एवं वृक्षारोपण अभियान

स्मारक साहित्य का प्रकाशन:

साहित्य और प्रकाशनों की एक विशेष श्रृंखला (जिसमें माताजी के पहले अप्रकाशित प्रवचन, पत्र और संस्मरण शामिल हैं) को संकलित और प्रसारित किया गया ताकि उनके दिव्य संदेश को नई पीढ़ियों तक पहुँचाया जा सके।

अंतर्राष्ट्रीय समारोह एवं ऑनलाइन कार्यक्रम:

दुनिया भर के AWGP केंद्र, वर्चुअल कार्यक्रमों, सामूहिक ध्यान और ऑनलाइन प्रवचनों के माध्यम से इसमें शामिल हो रहे हैं। इस डिजिटल युग में, युगऋषि और वंदनीया माताजी का संदेश कई भाषाओं और संस्कृतियों में गूँज रहा है।

श्रद्धालुओं से आह्वान: इस आध्यात्मिक पुनर्जागरण में भाग लेने के लिए आह्वान किया गया।

वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी केवल एक औपचारिक उत्सव नहीं है, यह आंतरिक जागरण का एक आंदोलन है। प्रत्येक भक्त, प्रत्येक साधक और प्रत्येक महान आत्मा को इस अखण्ड ज्योति की एक जीवंत ज्वाला बनने के लिए, सद्गुण विकास (नैतिक विकास), संस्कार निर्माण, और सामाजिक परिवर्तन की सेवा में अपना जीवन समर्पित करने का संकल्प लेने के लिए आमंत्रित किया गया है।

आइए, हम सब मिलकर उनकी विरासत को फूलों से नहीं, बल्कि कर्मों से; केवल अनुष्ठानों से नहीं, बल्कि रूपांतरण से सम्मानित करें।

30 नवंबर, 2025 से ही जन्मशताब्दी वर्ष 2026 तैयारियाँ शुरू हो गई थीं। गायत्री परिवार के परिजनों ने श्रमदान एवं समयदान करके जिस श्रद्धा का उदाहरण दिया उसकी सराहना करना हमारा परम कर्तव्य है।

आइये संक्षेप में शताब्दी नगर की रचना पर दृष्टि डाल लें:

आँखों देखा हाल के लिए कुछ चित्र अवश्य संलग्न किये हैं लेकिन शांतिकुंज वीडियो गायत्री परिवार के यूट्यूब चैनल पर अनेकों वीडियोस उपलब्ध हैं। इसी स्मारिका के साथ कुछ वीडियोस लिंक्स लगाने का प्रयास किया है।इन लिंक्स को क्लिककब्ले करने के लिए स्मारिका को डाउनलोड करना होगा।

वृहद पंडाल निर्माण तेज़ी पर:

कार्यक्रम स्थल पर विशाल डोम-आकार के पंडाल का निर्माण किया गया। लोहे की विशाल संरचना, सुरक्षा व्यवस्था और मौसम सुरक्षा के लिए मजबूत कवरिंग भी की गई। स्थल की तैयारी में तकनीकी टीम, विद्युत विभाग, ध्वनि एवं प्रकाश व्यवस्था सहित अनेक विभाग लगातार जुटे रहे।

रहने, भोजन व सेवा व्यवस्था का विस्तार:
क्षेत्र में अस्थायी आवासीय व्यवस्था, रसोई क्षेत्र तथा सामग्री भंडारण के लिए टेंट और शेड स्थापित किए गए। भोजन निर्माण हेतु बड़े कड़ाहे, भंडारण इकाइयाँ और सेवा सामग्री स्थल पर पहुंचाए गए। परिजन और सेवादल के सदस्य स्वयं वाहनों से सामान उतारते और व्यवस्थित करते दिखते थे।

सेवा, श्रमदान और अनुशासन—परिवार की पहचान:
शांतिकुंज व गायत्री परिवार के कार्यकर्ता पूर्ण समर्पण व श्रद्धा के भाव से श्रमदान करते रहे। छोटे-बड़े सभी कार्यों में सभी परिजन बिना किसी भेदभाव के सेवा हेतु हमेशा तत्पर दिख रहे थे। बच्चों से लेकर वरिष्ठ स्वयंसेवकों तक में सेवा की प्रेरणादायी झलक देखी जा सकती थी।

आध्यात्मिक वातावरण में तैयारी:
तैयारियों के साथ-साथ साधना, प्रार्थना और जप का क्रम भी निरंतर जारी रहा, जिससे कार्यक्रम स्थल पर आध्यात्मिक ऊर्जा का वातावरण स्वाभाविक रूप से अनुभव किया जाता रहा।

सामूहिक प्रयासों से विराट आयोजन साकार:
दिन-रात जारी परिश्रम, टीम समन्वय और संगठन की एकजुटता से यह ऐतिहासिक कार्यक्रम एक भव्य और दिव्य रूप लेने की ओर अग्रसर हुआ। जन्मशताब्दी वर्ष की महान शुरुआत को भव्य बनाने में प्रत्येक परिजन में अपना पसीना समर्पित करता दिखा।

निर्माण कार्य एवं अतिरिक्त जानकारी के लिए नीचे दिए लिंक अवश्य देखें:

बैरागी द्वीप में 19 जनवरी से शुरू होगा शांतिकुंज का शताब्दी समारोह, जुटेंगे हजारों साधक:

शताब्दी नगर पर "The Newswala" की रिपोर्ट

Important information: वैरागी द्वीप शताब्दी नगर, हरिद्वार ...

Cinematic Drone View of Shatabdi Nagar | अखंड ज्योति...

जन्मशताब्दी 2026—गायत्री परिवार का स्वर्णिम शताब्दी वर्ष |...

शताब्दी नगर से शान्तिकुंज | दैवीय दृश्य | शान्तिकुंज हरिद्वार...

अखंड दीपक के 100 वर्ष – सत संकल्प का महाआह्वान: Dr. ...

पूज्य गोविंद गिरी जी महाराज का ऐतिहासिक उद्बोधन | वैराग...

बंदूक से सीमा, संस्कारों से संस्कृति | Rajnath Singh का प्रेर...

आज का भारत – अखंड चेतना से राष्ट्र निर्माण तक | Amit Sh...

अशांत विश्व को दिशा देने का संकल्प | हम बदलेंगे—युग बदले...

चलो मनाएं जन्म शताब्दी, माताजी की जन्म शताब्दी - Pragy...

शताब्दी समारोह 2026 | अखंड ज्योति से युग परिवर्तन | पर्या...

आदिवासी समाज: भारत की संस्कृति के मूल रक्षक | डॉ. चिन्...

LIVE Vasudha Vandan & Tirth Raj Vandan 2025 | Harid...

यहाँ पर हमने केवल कुछ एक वीडियोस के लिंक्स ही एकत्रित किये हैं, शांतिकुंज के विभिन्न चैनल्स पर अनेकों और वीडियोस अपलोड की गयी हैं,निम्नलिखित लिंक को क्लिक करके और विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है

youtube.com/c/shantikunjvideo

STOP

शांतिकुंज ने बैरागी कैंप में बसाया शताब्दी नगर, 108 तीर्थ स्थलों की रज और जल से किया प्रखर पूजन:

शांतिकुंज का शताब्दी समारोह 19 जनवरी 2026 से शुरू हुआ था । इस 4 दिवसीय समारोह में दुनिया भर से लाखों श्रद्धालु लोगों ने भाग लिया।

ETV चैनल ने अपने समाचार पत्र में यह न्यूज़ आइटम प्रकाशित की : हरिद्वार:आध्यात्मिक संस्था शांतिकुंज का शताब्दी समारोह हरिद्वार में उत्साह पूर्ण ढंग से बनाया जा रहा है। इसके लिए हरिद्वार के बैरागी कैंप मैदान में शताब्दी नगर बसाया गया है। मंगलवार को शताब्दी नगर में कार्यक्रम के लिए 108 तीर्थ स्थलों की रज और जल से प्रखर प्रज्ञा पूजन किया गया।

शांतिकुंज ने बैरागी कैंप में बसाया शताब्दी नगर:

प्रखर प्रज्ञा पूजन में हरिद्वार के डीएम, एसएसपी और तमाम साधु संत शामिल रहे। जनवरी महीने में शताब्दी समारोह के अवसर पर चार दिवसीय कार्यक्रम आयोजित होगा। उसमें लाखों की संख्या में शांतिकुंज के साधकों के जुटने की उम्मीद है। माता भगवती देवी शर्मा एवं अखंड दीप के शताब्दी समारोह को लेकर विशेष पूजन भी किया गया। कार्यक्रम में रामकृष्ण मिशन के संत स्वामी दया अमृतानंद एवं अरविन्द आश्रम के प्रमुख स्वामी ब्रह्मदेव समेत सैकड़ों साधक मौजूद रहे।

108 तीर्थ स्थलों की रज और जल से किया प्रखर पूजन:

इस अवसर पर स्वामी ब्रह्मदेव ने कहा कि युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य और माता भगवती देवी शर्मा का जीवन किसी संप्रदाय की सीमा में नहीं बंधा बल्कि वह उस सार्वभौमिक चेतना का प्रतिनिधित्व करता है जहां सेवा ही साधना है और साधना ही समाज निर्माण का आधार है। इस दौरान डॉ. चिन्मय पंड्या ने कहा कि आज से करीब 100 पूर्व अद्भुत विचारक पंडित श्रीराम शर्मा ने अखिल भारतीय गायत्री परिवार की स्थापना की थी। उन्होंने पूरे विश्व में 15 करोड़ से अधिक साधक जोड़े और पांच हजार केंद्रों की स्थापना की है। परम वंदनीय माताजी के आशीर्वाद से गायत्री परिवार के लोग हरिद्वार की पवित्र कुंभ भूमि पर एक साथ एकत्रित हो रहे हैं। शताब्दी नगर में कार्यक्रम के लिए प्रखर प्रज्ञा पूजन किया गया। हरिद्वार के डीएम, एसएसपी समेत जितने भी साधु संत कार्यक्रम में उपस्थित हुए हैं, सभी का आभार व्यक्त करते हैं।

19 जनवरी से शुरू हो रहा है शांतिकुंज का शताब्दी समारोह:
बैरागी कैंप स्थित शताब्दी नगर में आयोजित शताब्दी समारोह के सजल श्रद्धा स्थापना समारोह के अंतर्गत अखंड ज्योति,51 पवित्र तीर्थ स्थलों की रज और जल की जिलाधिकारी मयूर दीक्षित, एसएसपी प्रमेंद्र सिंह डोबाल समेत सभी साधु संतों ने पूजा अर्चना की। शांतिकुंज के साधकों द्वारा देश के 108 तीर्थ स्थलों के रज और जल एकत्रित किए गए और प्रखर पूजन किया गया। जनवरी के महीने में यहां शांतिकुंज का कुंभ लगेगा जिसमें देशभर के करोड़ों साधक जुटेंगे। बताते चलें कि 19 जनवरी 2026 से शताब्दी समारोह शुरू हो रहा है। समारोह 23 जनवरी तक चलेगा। समारोह में जाने के लिए आईडी कार्ड बनेंगे।

वसुधा वंदन समारोह में लेफ्टिनेंट जनरल श्री गुरुमीत सिंह जी राज्यपाल उत्तराखंड द्वारा 'रज-वंदन'

शताब्दी समारोह 2026 के भव्य शुभारंभ अवसर पर, 4 दिसंबर 2025 को कनखल स्थित बैरागी कैंप में आयोजित वसुधा वंदन समारोह के दौरान उत्तराखंड के राज्यपाल ले. जनरल गुरमीत सिंह (से.नि.) ने देशभर के 108 तीर्थों से संगृहीत पवित्र रज-जल का विधिवत रज-वंदन व पूजन कर राष्ट्रीय एकता, विश्व-मैत्री और आध्यात्मिक जागरण का संकल्प लिया। यह समारोह हजारों

साधकों, स्वयंसेवकों, संत-महात्माओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

रज-वंदन के माध्यम से राष्ट्र-एकता का संकल्प:

प्रमुख तीर्थों, आध्यात्मिक स्थलों और ऐतिहासिक धरा-केंद्रों से विशिष्ट रूप से लाए गए पवित्र रज एवं जल का पूजन, कार्यक्रम की मुख्य विशेषता रही। राज्यपाल ने रज-वंदन करते हुए देश की पवित्र भूमि के प्रति कृतज्ञता, संरक्षण और सांस्कृतिक एकता का संदेश दिया। राज्यपाल बोले:

"यह केवल रज नहीं, राष्ट्र-आत्मा का स्पंदन है। यह रज केवल धूल नहीं, यह हमारी सभ्यता, हमारी विरासत और उस सांस्कृतिक शक्ति का प्रतीक है, जिसने भारत को विश्व-गुरु बनाया। इस रज से राष्ट्र-एकता, अखंड भारत की भावना और विश्व-मैत्री के मूल्य जुड़े हैं।अखंड दीप केवल एक ज्योति नहीं, बल्कि धर्म-जागरण, सत्य, नैतिकता और अखंड भारत की चेतना का प्रतीक है। गायत्री परिवार ने समाज में सेवा, स्वच्छता और नैतिक उन्नयन की जो परंपरा स्थापित की है, वह राष्ट्र-निर्माण में अद्वितीय योगदान है।"

राज्यपाल ने स्वयंसेवकों की सेवा-भावना को प्रेरक बताते हुए कहा:

"हजारों सेवकों ने जिस अनुशासन और निष्ठा से यह भव्य व्यवस्था बनाई है, वह समाज के लिए आदर्श उदाहरण है। यह श्रम-स्वेद की सभ्यता है, जिसमें आदेश नहीं, समर्पण है।"

रज-वंदन के दौरान यह दृश्य रहा अत्यंत भावपूर्ण :

- **मंच पर स्थापित कलशों में देशभर की पवित्र मिट्टी व जल का संकलन**
- **राज्यपाल ने शिरोधार्य कर रज का वंदन किया**
- **अतिथियों ने दीप-प्रज्वलन, जल-अर्पण और संकल्प सूत्र में भाग लिया**
- **सम्पूर्ण क्षेत्र में गायत्री मंत्र, शंखध्वनि और वैदिक स्वर गूंजे**
- **उपस्थित साधकों ने विश्व-शांति, पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक एकता का संकल्प लिया**

राष्ट्रीय आध्यात्मिक चेतना का अद्भुत संगम:

रज-वंदन कार्यक्रम ने एक संदेश दिया:

"हम एक भूमि, एक संस्कृति और एक मानवता हैं—वसुधैव कुटुम्बकम्।"

कार्यक्रम में मौजूद साधक व अतिथिगण भाव-विभोर दिखाई दिए। वातावरण में दिव्यता और एकात्म-बोध का अद्भुत अनुभव सभी ने साझा किया।

प्रस्तुत हैं इस कार्यक्रम की कुछ झलकियां:

कल्पेश्वर
धारी देवी
तुंगनाथ

GD0002

ध्यान बद्री
रुद्रनाथ
वृद्ध बद्री
कालीमठ शक्तिपीठ
गोल देवता
बैजनाथ धाम

डॉ. चिन्मय पंड्या—शताब्दी वर्ष माताजी की प्रेरणा को आगे बढ़ाने का संकल्प:

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति एवं शताब्दी दल–नायक डॉ. चिन्मय पंड्या ने कहा:

"माताजी ने नारी को परिवार और समाज की आधारशिला के रूप में देखा। उन्होंने संस्कार, सेवा और शिक्षा के माध्यम से नारी को सामर्थ्य प्रदान किया। शताब्दी वर्ष, माताजी की इसी प्रेरणा को आगे बढ़ाने का संकल्प है। जो कार्य सामान्यतः अत्यंत कठिन माना जाता है, हमारे स्वयंसेवकों ने उसे अल्प समय में अपने श्रम–स्वेद से संभव कर दिखाया है। एक माह से हजारों सेवक स्थल–व्यवस्था, मार्ग–सज्जा, स्वच्छता और संरचना संबंधी तैयारी में जुटे थे।"

उन्होंने सभी स्वयंसेवकों और भरोसा देने वाली जनता को आभार व्यक्त किया।

शंकराचार्य श्री राज–राजेश्वरानंद जी का वक्तव्य:

"भारतीय संस्कृति की जड़ें गुरु–शिष्य परंपरा में हैं। गुरु कुम्हार है और शिष्य कुंभ। गुरु बाहर से थपकी और भीतर से सहारा देकर जीवन को आकार देता है। माता–पिता, गुरु और ईश्वर—ये सनातन संस्कृति की एक ही धारा हैं।गायत्री परिवार ने इन मूल्यों को केवल प्रचार में नहीं, बल्कि व्यवहार में उतारा है। यह समाज–जागरण की सशक्त ऊर्जा है।"

भाजपा प्रदेश महामंत्री आदित्य कोठारी का उद्बोधन:

"गायत्री परिवार ने वसुधैव कुटुम्बकम् की परंपरा को जीवन में उतारकर भारतीय संस्कृति का पुनरुत्थान किया है।
संस्कार–निर्माण, नारी–जागरण और युवा नेतृत्व के क्षेत्र में इनके कार्य प्रेरक और अनुकरणीय हैं।"

विधायक मदन कौशिक का संदेश:

"हम बदलेंगे, युग बदलेगा, यह केवल नारा नहीं, सामाजिक क्रांति का मंत्र है। गायत्री परिवार की सेवा–केंद्रित कार्यशैली उत्तराखंड और हरिद्वार के लिए रोल मॉडल है।"

राष्ट्रीय सह–संगठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश जी का संदेश:

“अखंड दीप धर्म–जागरण की ज्योति है और माताजी नारी–जागरण की अधिष्ठात्री शक्ति। सेवा, अनुशासन और संगठन—यह आधुनिक भारत के निर्माण का मजबूत आधार है।”

उन्होंने कहा:
“गायत्री परिवार की संगठनात्मक शक्ति समाज परिवर्तन का सर्वोत्तम उदाहरण है।”

हजारों स्वयंसेवकों का अद्‍भुत श्रम–स्वेद

समारोह की सभी व्यवस्थाओं, स्वच्छता, स्वागत, जल–व्यवस्था, भोजन, यातायात, अनुशासन, सुरक्षा, ध्वनि प्रणाली में तीन वर्ष के बालक से 80 वर्ष के वरिष्ठ तक हजारों सेवकों ने हिस्सा लिया। पूरे क्षेत्र में समर्पण, अनुशासन और एकता का अद्‍भुत दृश्य देखने को मिला।प्रस्तुत हैं कुछ झलकियां:

परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

वसुधा वंदन (तीर्थ रज पूजन) समारोह
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
100 YEARS
1926-2026
04 दिसम्बर 2025 • बैरागी द्वीप, हरिद्वार
गायत्रीतीर्थ - शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

www.awgp.org
www.dsvv.ac.in
शताब्दी समारोह
वसुधा वंदन (तीर्थ रज पूजन) समारोह
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी एवं
दीप शताब्दी वर्ष
04 दिसम्बर 2025 • बैरागी द्वीप, हरिद्वार
गायत्रीतीर्थ - शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
शताब्दी समारोह
वसुधा वंदन
(तीर्थ रज पूजन)
समारोह

एवं
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा
जन्म शताब्दी
1926
2026
शताब्दी समारोह

परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा
जन्म शताब्दी
1926
2026
बैरागी द्वीप, हरिद्वार

www.dsvv.ac.in
शताब्दी समारोह
www.awgp.org
वसुधा वंदन (तीर्थ रज पूजन) समारोह
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
100
04 दिसम्बर 2025 • बैरागी द्वीप, हरिद्वार
गायत्रीतीर्थ - शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
जन्म शताब्दी
1926
2026

शताब्दी समारोह
www.dsvv.ac.in
www.awgp.org
वसुधा वंदन (तीर्थ रज पूजन) समारोह
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
जन्म शताब्दी
04 दिसम्बर 2025 • बैरागी द्वीप, हरिद्वार
गायत्रीतीर्थ - शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

शताब्दी समारोह
www.dsvv.ac.in
www.awgp.org
वसुधा वंदन (तीर्थ रज पूजन) समारोह
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी एवं
जन्म शताब्दी
04 दिसम्बर 2025 • बैरागी द्वीप, हरिद्वार
गायत्रीतीर्थ - शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

www.dsvv.ac.in
शताब्दी समारोह
www.awgp.org
वसुधा वंदन (तीर्थ रज पूजन) समारोह
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
04 दिसम्बर 2025 • बैरागी द्वीप, हरिद्वार

ले०ज०(से.नि.) श्री गुरमीत सिंह जी

पूजन) समारोह
देवी शर्मा जी एवं
जन्म शताब्दी
1926

1926
2026
जन्म शताब्दी

वसुधा वंदन (तीर्थ रज पूजन) समारोह
परम वन्दनीया माता भगवती
र्मा जी एवं
अखण्ड दीप शता

वसुधा वंदन (तीर्थ रज पूजन)
परम वन्दनीया माता भगवती
र्मा जी एवं
अखण्ड दीप शताब्दी

शताब्दी समारोह
www.dsvv.ac.in
www.awgp.org
वसुधा वंदन (तीर्थ रज पूजन) समारोह
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
100
1926-2026
04 दिसम्बर 2025 • बैरागी द्वीप, हरिद्वार
गायत्रीतीर्थ - शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
1926 2026
जन्म शताब्दी
1926 2026

गायत्री

04

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
कार्यकर्ता पाथेय

04
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

www.dsvv.ac.in
शताब्दी समारोह
www.awgp.org
वसुधा वंदन (तीर्थ रज पूजन) समारोह
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
जन्म शताब्दी

www.dsvv.ac.in
शताब्दी समारोह
www.awgp.org
वसुधा वंदन (तीर्थ रज पूजन) समारोह
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
जन्म शताब्दी

वैरागी द्वीप में शांतिकुंज की थीम पर बना भव्य प्रवेश द्वारः

29 दिसंबर, 2025 की न्यूज आइटम के अनुसार
धर्मनगरी हरिद्वार के वैरागी द्वीप में आगामी जनवरी माह में आयोजित होने वाले भव्य जन्मशताब्दी समारोह को लेकर तैयारियाँ युद्धस्तर पर चल रही हैं। यह ऐतिहासिक एवं प्रेरणादायी आयोजन न केवल आध्यात्मिक दृष्टि से, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक स्तर पर भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए पूरे कार्यक्रम स्थल को सुव्यवस्थित, आकर्षक और गरिमामय स्वरूप दिया जा रहा है।

आगंतुकों के स्वागत हेतु वैरागी द्वीप के मुख्य प्रवेश स्थल पर गायत्री तीर्थ, शांतिकुंज की विशिष्ट वास्तुकला और आध्यात्मिक थीम पर आधारित एक विशाल एवं भव्य प्रवेश द्वार का निर्माण किया गया। यह प्रवेश द्वार शांतिकुंज की पहचान, साधना, संस्कार और सेवा के भाव को प्रतीकात्मक रूप से प्रस्तुत करता था, जो आगंतुकों को प्रथम दृष्टि में ही आध्यात्मिक अनुभूति प्रदान करता रहा। कार्यक्रम से जुड़े अधिकारियों के अनुसार, जन्मशताब्दी समारोह में देश-विदेश से बड़ी संख्या में श्रद्धालु, साधक, कार्यकर्ता एवं गणमान्य अतिथि शामिल होंगे। इसी को देखते हुए प्रवेश द्वार के साथ-साथ मंच, पंडाल, सजावट, प्रकाश व्यवस्था एवं अन्य आधारभूत सुविधाओं को भी योजनाबद्ध ढंग से विकसित किया गया। आयोजकों का कहना था कि यह समारोह केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक युगदृष्टा विचारधारा और जीवन मूल्यों को समाज तक पहुँचाने का महापर्व होगा। वैरागी द्वीप में बना यह भव्य प्रवेश द्वार जन्मशताब्दी समारोह की गरिमा और व्यापकता का प्रतीक बनकर उभरा जो आने वाले दिनों में श्रद्धालुओं के आकर्षण का प्रमुख केंद्र बना रहा।

हरिद्वार के बैरागी दीप पर जन्मशताब्दी नगर में ऋषि क्षेत्र का भव्य अनावरण

4 जनवरी, 2026 वाले दिन बैरागी दीप पर अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा विकसित जन्मशताब्दी नगर में ऋषि क्षेत्र अनावरण कार्यक्रम के अंतर्गत अत्रि नगर का भव्य अनावरण गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा प्रतिनिधि, जन्मशताब्दी कार्यक्रम के दलनायक एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पंड्या जी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में आदरणीय डॉ. चिन्मय पंड्या जी ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी ने ऋषि परंपरा को

पुनर्जीवित करते हुए मानवता के उत्थान हेतु अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। उन्हीं की प्रेरणा से आज करोड़ों गायत्री परिजन साधना, सेवा एवं संस्कार के पथ पर अग्रसर होकर राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान दे रहे हैं।

कार्यक्रम में श्री आनंद वर्धन जी, मुख्य सचिव उत्तराखंड, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। श्री अजय भट्ट जी, सांसद (नैनीताल–उधम सिंह नगर), श्री मिलिंद परांडे जी, केंद्रीय महामंत्री विश्व हिंदू परिषद एवं हरिद्वार की मेयर श्रीमती किरण जैसल जी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

ऋषि क्षेत्र अत्रि नगर का यह अनावरण ऋषि संस्कृति, युग निर्माण तथा मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना हेतु किए जा रहे सतत प्रयासों का सशक्त प्रतीक है।

अतिथियों ने गायत्री परिवार द्वारा साधना, सेवा, संस्कार एवं राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में किए जा रहे प्रेरणादायक कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

कार्यक्रम में उपस्थित गायत्री परिजनों ने ऋषि परंपरा को आगे बढ़ाने हेतु साधना एवं सेवा के मार्ग पर निरंतर अग्रसर रहने का संकल्प व्यक्त किया।

11 जनवरी 2026 बैरागी दीप में जन्मशताब्दी समारोह के अंतर्गत आदरणीय चिन्मय भैया जी द्वारा भोजनालय विस्तार का शुभारंभ हुआ:

कार्यक्रम का शुभारंभ गायत्री मंत्र के सामूहिक जप, दीप प्रज्वलन एवं वैदिक मंत्रोच्चार के साथ हुआ। इस अवसर पर आदरणीय भैया जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भोजनालय सेवा, अनुशासन और यज्ञीय जीवनशैली का प्रतीक है, जहाँ शुद्ध, सात्त्विक भोजन के माध्यम से साधकों एवं सेवाधारियों को आत्मिक ऊर्जा प्राप्त होगी। उन्होंने इसे वंदनीया माताजी के सेवा-संस्कारों एवं अखंड दीप की तपश्चर्या परंपरा का सजीव रूप बताया। भोजनालय के शुभारंभ से जन्मशताब्दी समारोह के अंतर्गत आने वाले साधकों, कार्यकर्ताओं एवं आगंतुकों के लिए सुव्यवस्थित, स्वच्छ एवं समयबद्ध भोजन

व्यवस्था सुनिश्चित होगी। संस्था प्रबंधन द्वारा बताया गया कि यहाँ गुणवत्ता, स्वच्छता और सेवा-भाव को सर्वोपरि रखा जाएगा। इस पावन अवसर पर गायत्री परिवार के वरिष्ठ पदाधिकारी, सेवाधारी भाई-बहन, साधकगण एवं स्वयंसेवक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन सामूहिक प्रार्थना एवं धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। यह शुभारंभ वंदनीया माताजी के सेवा-आदर्शों और अखंड दीप की अविरल साधना परंपरा को आगे बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

प्रस्तुत हैं कुछ झलकियां:

PUMA

अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
100
शताब्दी समारोह- 2026

14 जनवरी 2026 को प्रकाशित विवरण के अनुसार हरिद्वार के बैरागी द्वीप पर गायत्री परिवार द्वारा निर्मित किए जा रहे शताब्दी नगर में इन दिनों अभूतपूर्व गतिविधियाँ देखने को मिल रही हैं। परम वंदनीया माता जी एवं अखंड दीप के शताब्दी समारोह की तैयारियों के अंतर्गत, कड़ाके की ठंड के बावजूद हजारों स्वयंसेवक सामूहिक रूप से श्रमदान कर रहे हैं। गायत्री परिवार के युग-सृजन सैनिकों के सतत पुरुषार्थ से बैरागी द्वीप का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। एक ओर नगर को भव्य रूप देने के लिए संरचनात्मक एवं सजावटी कार्य चल रहे हैं, वहीं दूसरी ओर शिल्पकारों के कुशल हाथों से पाषाणों को कलात्मक आकृतियों में ढाला जा रहा है। ये पाषाण मूर्तियाँ केवल सौंदर्य का माध्यम नहीं हैं, बल्कि विचार-क्रांति के प्रतीक के रूप में उभरकर सामने आ रही हैं।

निर्माण स्थल पर तैयार की जा रही लाल मशाल की आकृतियाँ विशेष आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं। आयोजकों के अनुसार, ये आकृतियाँ युग-परिवर्तन और विचार-क्रांति के संदेश को प्रतीकात्मक रूप से प्रस्तुत करती हैं। शिल्पकला के माध्यम से जड़ पाषाणों को चेतना का संवाहक बनाकर, गुरुदेव के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है।

शताब्दी नगर में जुटे विद्वान, कलाकार, स्वयंसेवक एवं भावनाशील कार्यकर्ता सामूहिक रूप से इस आयोजन को एक वैचारिक आंदोलन का स्वरूप दे रहे हैं। आयोजकों का कहना है कि यह प्रयास केवल एक आयोजन तक सीमित नहीं है, बल्कि मानवता को युग-निर्माण की दिशा में प्रेरित करने का माध्यम है।

शताब्दी समारोह की तैयारियों के साथ-साथ यह स्थल अब सेवा, साधना और सृजन का जीवंत उदाहरण बनता जा रहा है, जहाँ पत्थर भी मौन रहकर परिवर्तन का संदेश दे रहे हैं।

ध्वज वंदन समारोह के साथ प्रारंभ हुआ गायत्री परिवार का दिव्य अखंड दीप एवं माता भगवती देवी शर्मा जी का जन्मशताब्दी महोत्सव

January 19, 2026

शताब्दी नगर में आयोजित ध्वज वंदन समारोह के साथ ही गायत्री परिवार की चिर-प्रतीक्षित दिव्य अखंड दीप स्थापना एवं परम वंदनीय माता भगवती देवी शर्मा जी के जन्मशताब्दी महोत्सव का विधिवत शुभारंभ हो गया। इस पावन अवसर पर देश-विदेश से

पधारे हजारों श्रद्धालु परिजनों की उपस्थिति ने आयोजन को ऐतिहासिक स्वरूप प्रदान किया।

कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित सामूहिक चर्चा सत्र को संबोधित करते हुए शांतिकुंज व्यवस्थापक आदरणीय श्री योगेंद्र गिरी जी ने जन्मशताब्दी समारोह के आगामी कार्यक्रमों की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि यह शताब्दी वर्ष केवल उत्सव नहीं, बल्कि विचार, चरित्र और कर्म के स्तर पर युग परिवर्तन की साधना का अवसर है।

दोपहर कालीन सत्र में गायत्री परिवार के प्रतिनिधि एवं शताब्दी समारोह के दलनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पंड्या जी ने उपस्थित हजारों परिजनों को भावविभोर करते हुए कहा कि आज का यह क्षण हम सभी के लिए एक गहरी आत्मिक पुकार लेकर आया है। उन्होंने आग्रह किया कि इस अवसर पर प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को अपनी एकाकी आत्मिक यात्रा पर अनुभव करे और यह भाव जागृत करे कि पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीय माता जी ने हमें अपनी गोद में स्थान दिया है।

डॉ. पंड्या जी ने कहा कि हमें यह चिंतन कर संकल्प के साथ लौटना है कि पूज्य गुरुदेव के महान उद्देश्यों की पूर्ति में हमारी व्यक्तिगत भूमिका क्या होगी और उसे हम कैसे सुनिश्चित करेंगे। उन्होंने कार्यकर्ताओं के स्वरूप, केंद्रों की संरचना तथा कार्यक्रमों की दिशा को भविष्य की स्पष्ट रूपरेखा का आधार बताया।

उन्होंने भावपूर्ण शब्दों में कहा कि उनकी दृष्टि में पूज्य गुरुदेव केवल एक महापुरुष ही नहीं, बल्कि भगवान थे क्योंकि उन्होंने समाज के

अंतिम व्यक्ति तक की चिंता की। उन्होंने कहा कि गुरुदेव हमारे लिए केवल चित्र, समाधि स्थल या शोध का विषय नहीं, बल्कि वे हमारे लिए जीते-जागते भगवान थे, हैं और रहेंगे। इसी अनुभूति के साथ हम सभी का दायित्व है कि आने वाली पीढ़ियों को वही दिव्य विरासत सौंपें, जिसकी अपेक्षा पूज्य गुरुदेव हमसे करते थे।

अपने उद्बोधन के अंत में उन्होंने पूज्य गुरुदेव के एक वचन को स्मरण करते हुए कहा:
"यदि मैं किसी के जीवन में आता हूँ, तो बुखार की तरह आता हूँ।"
उन्होंने कामना की कि उपस्थित सभी परिजनों को गुरुदेव और माताजी के नाम का ऐसा 'बुखार' चढ़े कि उनके अतिरिक्त और कुछ सूझे ही नहीं।

कार्यक्रम में गायत्री परिवार की प्रमुख, स्नेह सलिला शांतिकुंज अधिष्ठात्री श्रद्धेया जीजी ने अपने उद्बोधन में उपस्थित परिजनों के त्याग, तप और समर्पण की भावपूर्ण सराहना की। उन्होंने कहा कि वे कोई भाषण या लेक्चर देने नहीं आई हैं, बल्कि उन भाई-बहनों के प्रति सम्मान व्यक्त करने आई हैं, जो दूर-दूर से कठिन साधनाओं को सहते हुए यहाँ पहुँचे हैं।

श्रद्धेया जीजी ने कहा कि कुछ समय पूर्व तक यह स्थान घने जंगल से घिरा हुआ था, जहाँ सुविधाओं का अभाव था परंतु परिजनों ने अपने हाथों से लकड़ियाँ काटीं, कंकर-बजरी उठाई, कठिन परिश्रम किया, ठंड और असुविधाओं को सहा, किंतु कभी भी शिकायत नहीं की। उन्होंने कहा कि ऐसे समर्पित कार्यकर्ताओं को स्मरण कर

उनका मन करता है कि अपनी श्रद्धा को हथेली पर रखकर उन्हें अर्पित कर दें।

पूरा आयोजन श्रद्धा, संकल्प और साधना के भाव से ओतप्रोत रहा, जिसने जन्मशताब्दी महोत्सव को केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि युग निर्माण की जीवंत साधना में परिवर्तित कर दिया।

शताब्दी समारोह 2026
वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

ध्वज वन्दन

वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

शताब्दी समारोह 2026

शताब्दी समारोह 2026
वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

शताब्दी समारोह 2026
वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

शताब्दी समारोह 2026
वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

श्रद्धेया जीजी की उपस्थिति में आदरणीय डॉ. चिन्मय पंड्या ने किया देव संस्कृति विश्वविद्यालय सहित विभिन्न प्रदर्शनों का उद्घाटन

January 19, 2026

शताब्दी नगर में आयोजित जन्मशताब्दी महोत्सव के अंतर्गत श्रद्धेया जीजी की गरिमामयी उपस्थिति में गायत्री परिवार के प्रतिनिधि एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति-कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पंड्या जी का विशेष कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस अवसर पर उन्होंने "देव संस्कृति विश्वविद्यालय, युग साहित्य का दिग्दर्शन, प्रदर्शनी एवं ऋषि युग्म झांकी" का विधिवत उद्घाटन किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक मंत्रोच्चार एवं आध्यात्मिक वातावरण के बीच हुआ। उद्घाटन उपरांत डॉ. चिन्मय पंड्या जी ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिसर का अवलोकन करते हुए इसे भारतीय संस्कृति, नैतिक शिक्षा एवं जीवन निर्माण की प्रयोगशाला बताया। उन्होंने कहा कि यह विश्वविद्यालय केवल शैक्षणिक संस्थान नहीं, बल्कि "विचार, चरित्र और कर्म की त्रिवेणी" है, जो भावी पीढ़ी को संस्कारित नेतृत्व प्रदान कर रही है।

इसके पश्चात "युग साहित्य का दिग्दर्शन" प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया, जहाँ परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा रचित साहित्य के माध्यम से युग परिवर्तन की विचारधारा को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रदर्शनी में गुरुदेव के साहित्यिक योगदान, जीवन दर्शन और सामाजिक चिंतन को दृश्य-श्रव्य

माध्यमों द्वारा प्रदर्शित किया गया, जिसे देखने के लिए श्रद्धालुओं की निरंतर भीड़ उमड़ती रही।

कार्यक्रम के अंतर्गत "ऋषि युग्म झांकी" का भी लोकार्पण किया गया, जिसमें पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीय माता भगवती देवी शर्मा जी के तप, त्याग और साधना से अनुप्राणित जीवन संदेश को सजीव रूप में दर्शाया गया था। झांकी के माध्यम से दोनों विभूतियों के युगद्रष्टा स्वरूप और मानवता के लिए उनके अवदान को भावपूर्ण अभिव्यक्ति मिली।

इस अवसर पर श्रद्धेया जीजी ने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि ऐसे आयोजन केवल देखने के लिए नहीं बल्कि आत्मसात करने के लिए होते हैं। उन्होंने परिजनों से आह्वान किया कि वे गुरुदेव-माताजी के विचारों को अपने जीवन में उतारकर जन्मशताब्दी वर्ष को सार्थक बनाएं।

कार्यक्रम में देश-विदेश से आए लाखों श्रद्धालु, कार्यकर्ता एवं परिजन उपस्थित रहे। पूरा वातावरण श्रद्धा, प्रेरणा और युग निर्माण के संकल्प से ओतप्रोत दिखाई दिया।

Dev Sanskriti Vishwavidyalaya
Gayatrikunj,

देव संस्कृति विश्वविद्यालय
सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा
the first and the supreme culture of the world
DEV SANSKRITI VISHWAVIDYALAYA
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya
ऐसा एक विश्वविद्यालय देश में होना ही चाहिए जो सच्चे मनुष्य, बड़े मनुष्य, महान मनुष्य, सर्वाङ्गपूर्ण मनुष्य बनाने की आवश्यकता पूर्ण कर सके।
- पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
There is a need for an educational institution which can mould its students into noble, enlightened, selfless, warm-hearted, compassionate and kind human beings.
- Pandit Shriram Sharma Acharya
@dsvvofficial
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya
Gayatrikunj, Shantikunj, Haridwar-249411, Uttarakhand, BHARAT • www.dsvv.ac.in

official
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya

देव संस्कृति विश्वविद्यालय
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya
7th CONVOCATION
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya Shantikunj, Haridwar.
7TH CONVOCATION
UK08AU1881
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya

www.dsvv.ac.in
देव संस्कृति विश्वविद्यालय
वैश्विक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण के उद्देश्य से भारतीय संस्कृति, प्राचीन शिक्षा पद्धति को पुनर्जीवित करके विश्वभर में शैक्षिक गुणवत्ता के साथ छात्रों के बौद्धिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उत्थान हेतु देव संस्कृति विश्वविद्यालय प्रतिबद्ध है ।
समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी एवं अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
100
1926-2026
CONVOCATION
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya Shantikunj, Haridwar,

परम पूज्य गुरुदेव पं श्रीराम शर्मा आचार्यजी द्वारा सृजित
युग साहित्य का दिग्दर्शन
1926
2026
जन्म शताब्दी
जन्मशताब्दी सद्ग्रंथमाला

EXIT

ऋषि युग्म जीवन झाँकी

जन्म शताब्दी
2026

ऋषि युग्म जीवन झाँकी

यज्ञ, कर्मकाण्ड, षोड़श संस्कार विवेचन साहित्य
03
B

10
B
11
B
उड़िया, बंगाली, उर्दू एवं असमिया साहित्य

भारतीय संस्कृति
एवं वन्दनीया माताजी के सपनोंका विश्वविद्यालय

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय का सप्तम दीक्षांत समारोह शताब्दी नगर में भव्य रूप से संपन्न:

हरिद्वार | 19 जनवरी 2026

पूज्य गुरुदेव की तप-साधना, अखंड दीप के प्राकट्य तथा परम वंदनीया माता जी की जन्म शताब्दी के पावन अवसर पर हरिद्वार स्थित वैरागी द्वीप के शताब्दी नगर में एक ऐतिहासिक अध्याय जुड़ गया। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव के स्वप्नों का साकार स्वरूप देवसंस्कृति विश्वविद्यालय भी उस ऐतिहासिक दस्तावेज़ का साक्षी बना, जिसकी गाथा आने वाली पीढ़ियाँ विश्व को सुनाएँगी।

दिनांक 19 जनवरी 2026 को वैरागी द्वीप के शताब्दी नगर में निर्मित विशाल सभागार में देवसंस्कृति विश्वविद्यालय का सप्तम दीक्षांत समारोह भव्य रूप से आयोजित किया गया। समारोह में विश्वविद्यालय के हजारों पूर्व एवं वर्तमान छात्र-छात्राओं तथा उनके परिजनों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का शुभारंभ आमंत्रित अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन एवं परम पूज्य गुरुदेव तथा परम वंदनीय माता जी को पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। राष्ट्रगान एवं कुलगीत के पश्चात सप्तम समावर्तन समारोह 2026 की विधिवत शुरुआत हुई। कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन के अनुरोध पर प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पंड्या जी ने दीक्षांत समारोह के आरंभ की घोषणा की।

भारत–यूके संबंधों की मजबूती पर अतिथियों के विचार

हाउस ऑफ लॉर्ड्स, यूनाइटेड किंगडम के सदस्य लॉर्ड कृष रावल जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत और यूनाइटेड किंगडम के बीच संबंध अत्यंत मजबूत और घनिष्ठ हैं, जो दोनों देशों के नेतृत्व के लिए विशेष महत्व रखते हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री कीर स्टारमर की ओर से 15 करोड़ सदस्यों वाले गायत्री परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। भारत की भूमिका की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि देश मूल्य-आधारित समाज और ऐसे युवा नेतृत्व का निर्माण कर रहा है, जो ज्ञान को चरित्र से जोड़कर विश्व को दिशा और प्रकाश प्रदान कर रहा है।

शताब्दी समारोह को ऐतिहासिक बताते हुए उन्होंने माता जी के अवतरण के 100 वर्ष तथा शाश्वत ज्योति के प्रज्वलन के 100 वर्ष पूर्ण

होने का उल्लेख किया और इसे विश्वास, अनुशासन एवं आंतरिक चेतना का प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि यह अवसर विश्व में गायत्री परिवार की स्थायी और सकारात्मक भूमिका को दर्शाता है।

इसके पश्चात हाउस ऑफ लॉर्ड्स, यूके के सदस्य लॉर्ड मेंडलसन ने हजारों की संख्या में उपस्थित विद्यार्थियों एवं परिजनों को संबोधित करते हुए कहा कि देवसंस्कृति विश्वविद्यालय में उपस्थित होना उनके लिए अत्यंत सम्मान की बात है। उन्होंने स्नातक विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि आज का दिन उनके वर्षों के अनुशासन, परिश्रम और त्याग का प्रतीक है—न केवल विद्यार्थियों का, बल्कि उनके परिवारों और शिक्षकों का भी।

उन्होंने कहा कि विद्यार्थी इस विश्वविद्यालय से केवल डिग्रियाँ ही नहीं, बल्कि उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण मूल्य लेकर जा रहे हैं—अपने जीवन की दिशा स्वयं चुनने की स्वतंत्रता। यह स्वतंत्रता एक विशेषाधिकार है, किंतु इसके साथ जिम्मेदारी भी जुड़ी हुई है।

लॉर्ड मेंडलसन ने देवसंस्कृति विश्वविद्यालय की अवधारणा की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह संस्थान उस विचार का प्रतिनिधित्व करता है, जिस पर वे गहराई से विश्वास रखते हैं। उनके अनुसार शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि उस ज्ञान का उपयोग सही समय पर, सही उद्देश्य के लिए कैसे किया जाए।

उन्होंने विश्वविद्यालय की प्रगति, उपलब्धियों और वैश्विक प्रतिष्ठा की सराहना करते हुए कहा कि गुरुदेव और माता जी द्वारा स्थापित मार्ग असाधारण और प्रेरणादायक है। माता जी के संदेशों की शताब्दी

एवं शाश्वत ज्योति के शताब्दी वर्ष का साक्षी बनने पर उन्होंने कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने डॉ. साहब एवं जीजी डॉ. चिन्मय पंड्या जी की विशेष प्रशंसा करते हुए कहा कि डॉ. चिन्मय जी विश्व के प्रमुख आध्यात्मिक नेताओं में से एक हैं, जिनकी प्रेरणा से देवसंस्कृति विश्वविद्यालय एक प्रभावशाली और विश्वस्तरीय संस्थान के रूप में स्थापित हुआ है।

प्रतिकुलपति का प्रेरक संबोधनः

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पंड्या जी ने अपने प्रेरक संबोधन में कहा कि यह उपाधियाँ मात्र प्रमाण-पत्र नहीं हैं, बल्कि जीवन की दिशा बताने वाले संकेत और मानचित्र हैं। उन्होंने कहा कि ईश्वर ने मनुष्य को असंख्य संभावनाओं के साथ इस धरती पर भेजा है। यदि जीवन की दिशा भटक जाए—सोच, भावना, जीवन-शैली और दृष्टिकोण विकृत हो जाए—तो व्यक्ति पतन की ओर बढ़ने लगता है।

आचार्य शंकराचार्य का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि जीवन में पतन सीढ़ियों से गिरती गेंद की तरह होता है, जो धीरे-धीरे नीचे की ओर गिरती जाती है। किंतु देवसंस्कृति विश्वविद्यालय की उपाधि उस दूसरी संभावना की ओर संकेत करती है, जहाँ चिंतन ऊर्ध्व दिशा में प्रवाहित हो, चरित्र और व्यक्तित्व ऊँचाइयों की ओर अग्रसर हों और भीतर प्रकाश, आर्य भावना तथा उदारता विकसित हो।

उन्होंने कहा कि यही मार्ग व्यक्ति को संत, महात्मा, देवत्व और अंततः परमात्मा की अनुभूति की ओर ले जाता है। मनुष्य में देवत्व का उदय ही धरती पर स्वर्ग की स्थापना का जीवंत उदाहरण है।

स्वामी अवधेशानंद गिरि जी का संदेश:

महामंडलेश्वर एवं जूना अखाड़ा अध्यक्ष परम पूज्य स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज ने अपने उद्बोधन में कहा कि अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा किया गया जन-जागरण कार्य ऐतिहासिक है। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार केवल एक आध्यात्मिक संगठन नहीं, बल्कि एक व्यापक सांस्कृतिक आंदोलन है, जिसने युग चेतना को जाग्रत किया है।

उन्होंने कहा कि शांतिकुंज के माध्यम से वेदांत की अवधारणाएँ—प्रज्ञा, ऋतंभरा और अमृता—को विचार से व्यवहार तक जीवंत किया गया है। गायत्री परिवार ने अंधविश्वासों, रूढ़ियों और सामाजिक वर्जनाओं को तोड़ते हुए नर-नारी समानता, छुआछूत उन्मूलन और 'हम सब एक हैं' जैसे मूल्यों को जन-आंदोलन का स्वरूप दिया है।

स्वामी अवधेशानंद गिरि जी ने आदरणीय डॉ. चिन्मय पंड्या जी के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि उनके अंतरराष्ट्रीय प्रवासों के साथ-साथ सुदूर वनवासी, गिरिवासी, आदिवासी, दलित, वंचित और शोषित वर्गों के बीच किए जा रहे सेवा कार्य गायत्री परिवार की मानवीय और सामाजिक प्रतिबद्धता को और अधिक सशक्त बनाते हैं।

विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति

इस गरिमामय अवसर पर डॉ. विजय दस्माना (अध्यक्ष, स्वामी राम हिमालयन विश्वविद्यालय), डॉ. दिवाकर सिंह जी (कुलाधिपति, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, बालाघाट), डॉ. अजय तिवारी जी (कुलाधिपति, स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर), प्रो. शोभित

माथुर जी (कुलपति, ऋषि हूड विश्वविद्यालय), प्रो. सतीश कुमार शर्मा जी (कुलपति, सूरजमल विश्वविद्यालय), प्रो. दिनेश शास्त्री जी (पूर्व कुलपति, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय), उद्योगपति फिरोज़ी मिस्त्री, जहान मिस्त्री, तथा श्री कार्तिकेय जौहरी (भारतीय राजदूत, पोलैंड) सहित अनेक विशिष्ट जनों की उपस्थिति रही।

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी

परम वन्दनीया

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
समावर्तन
समारोह
1926
2026

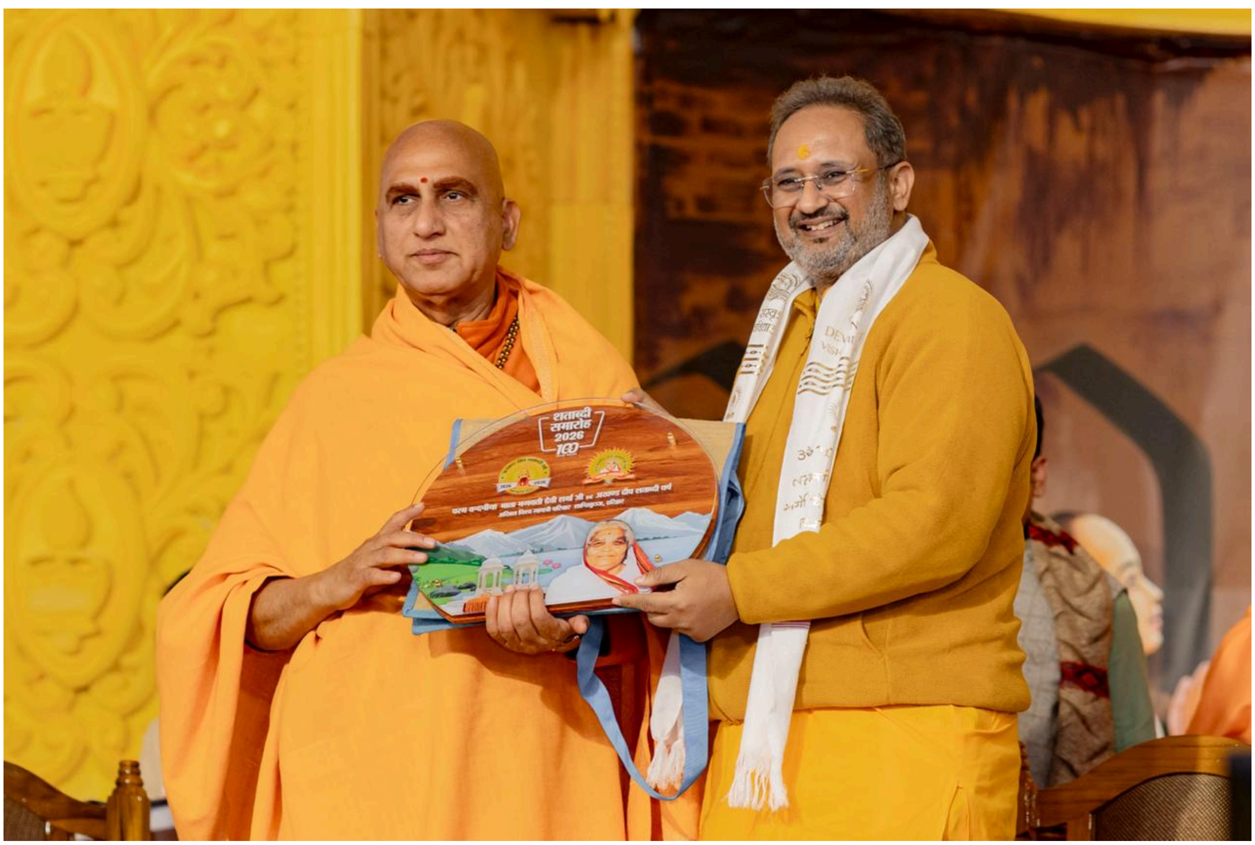
शताब्दी
समारोह
2026
100

शताब्दी समारोह 2026
देवी शर्मा जी
वर्ष
देव संस्कृति
विश्वविद्यालय
सप्तम

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी का अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

अखण्ड दीप
Lord Krish Raval

शताब्दी समारोह के क्रम में ज्योति कलश यात्रा का शुभारंभ – युगचेतना के संकल्पों का आलोकः

January 20, 2026

अखिल विश्व गायत्री परिवार के शताब्दी समारोह के पावन क्रम में वैरागी द्वीप, हरिद्वार स्थित भव्य शताब्दी नगर आज आध्यात्मिक चेतना, श्रद्धा और उल्लास से सराबोर हो उठा। इसी दिव्य वातावरण में ज्योति कलश यात्रा का शुभारंभ अत्यंत भावपूर्ण एवं गरिमामयी रूप से सम्पन्न हुआ। यह यात्रा युगऋषि परम् पूज्य पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी की तपःप्रज्वलित चेतना तथा परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी के अवतरण शताब्दी वर्ष के संकल्पों को जन-जन तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम बनी।

भारत भूमि को सदा से देवत्व की पुण्यधरा माना गया है। जहाँ देवचेतना का वास होता है, वहाँ आनंद, उमंग और नवयुग के आगमन की अनुभूति स्वतः प्रकट होती है। इसी देवभावना से ओतप्रोत हजारों पीत वस्त्रधारी साधक शताब्दी नगर के विशाल पंडाल में उपस्थित थे। यह अवसर अखंड दीप स्थापना एवं वंदनीया माताजी के शताब्दी समारोह का था, जिसने संपूर्ण वातावरण को युग परिवर्तन की चेतना से भर दिया।

ज्योति कलश यात्रा का शुभारंभ गायत्री परिवार की प्रमुख एवं नारी जागरण अभियान की वर्तमान ध्वजवाहक श्रद्धेया शैल जीजी, शताब्दी समारोह के दलनायक एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पंड्या जी तथा शांतिकुंज महिला मंडल प्रमुख आदरणीया शेफाली दीदी की गरिमामयी

उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। उपस्थित गायत्री परिजनों ने इस क्षण को युग-निर्माण के नव संकल्प के रूप में अनुभव किया।

इस अवसर पर महामंडलेश्वर एवं हरि सेवा आश्रम प्रमुख पूज्य स्वामी हरिचेतनानंद जी महाराज की गरिमामयी उपस्थिति विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में उन्होंने शांतिकुंज की बहुआयामी सेवाओं की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षा, स्वास्थ्य, आपदा-प्रबंधन और सामाजिक पुनर्निर्माण जैसे प्रत्येक क्षेत्र में अखिल विश्व गायत्री परिवार निस्वार्थ भाव से अग्रणी भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि शांतिकुंज केवल एक आध्यात्मिक केंद्र नहीं, बल्कि मानवता के सर्वांगीण उत्थान हेतु सतत सक्रिय एक जीवंत चेतना है।

श्रद्धेया शैल जीजी ने अपने भावपूर्ण संबोधन में परम पूज्य गुरुदेव की आंतरिक पीड़ा का स्मरण करते हुए उनके ऐतिहासिक लेख *"क्या कारवां बिखर जाएगा?"* का उल्लेख किया और दृढ़ स्वर में कहा—

"यह हमारा कारवां वशिष्ठों, विशिष्टों और विशेषज्ञों का काफ़िला है। यह बिखरने के लिए नहीं है। यह वह आँधी है, जो समाज की जड़ताओं को उखाड़ फेंकने का सामर्थ्य रखती है।"

कार्यक्रम के दौरान वंदनीय माताजी की लगभग 50 पुस्तकों तथा ज्योति कलश यात्रा स्मारिका का विमोचन भी किया गया, जिससे गुरुदेव की युगदृष्टि से ओत-प्रोत विचारों को समाज की अंतिम पंक्ति तक पहुँचाने का संकल्प और अधिक सुदृढ़ हुआ।

समापन अवसर पर श्रद्धेया शैल जीजी, पूज्य स्वामी हरिचेतनानंद जी महाराज, आदरणीय डॉ. चिन्मय पंड्या जी एवं आदरणीया शेफाली दीदी द्वारा सभी ज्योति कलशों पर पुष्पवर्षा कर कलश यात्रा को विधिवत रवाना किया गया। यह ज्योति कलश यात्रा शताब्दी समारोह के अंतर्गत आध्यात्मिक जागरण, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और राष्ट्र-निर्माण की दिशा में एक सशक्त प्रेरणा के रूप में प्रतिष्ठित हुई।

माता
एवं
दीप

शताब्दी समारोह 2026

ज्योति कलश यात्रा का भव्य एवं अभूतपूर्व शुभारंभ

January 20, 2026

वैश्विक एकता, सांस्कृतिक चेतना और युग-परिवर्तन का सजीव उत्सव

परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी एवं अखंड दीपक शताब्दी समारोह के पावन क्रम में ज्योति कलश यात्रा का शुभारंभ एक ऐतिहासिक, भव्य एवं अविस्मरणीय क्षण के रूप में सम्पन्न हुआ। यह यात्रा युगऋषि परम पूज्य पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी की विचार-ज्योति को जन-जन तक तथा विश्व के कोने-कोने तक पहुँचाने के संकल्प का सजीव प्रतीक बनकर प्रकट हुई।

भारत सहित विश्व के 14 से अधिक जोनों से ज्योति कलश लेकर गायत्री परिवार के परिजन श्रद्धा, अनुशासन और उल्लास के साथ हरिद्वार पहुँचे। देश-विदेश से आए लाखों परिजनों की सहभागिता ने इस यात्रा को वैश्विक एकता, सामूहिक चेतना और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का विराट स्वरूप प्रदान किया।

इस पावन अवसर पर आदरणीया श्रद्धेया शैल जीजी, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पंड्या जी एवं आदरणीया शेफाली दीदी ने स्वयं ज्योति कलश धारण कर बहनों का आत्मीय स्वागत किया। पुष्पवर्षा के साथ ज्योति कलश यात्रा के विधिवत उद्घोष ने सम्पूर्ण वातावरण को भाव-विभोर कर दिया।

20 जनवरी 2026 को वैरागी द्वीप स्थित शताब्दी नगर में निकली यह दिव्य यात्रा ऐसी प्रतीत हो रही थी, मानो भगवान भोलेनाथ एक बार फिर अपने ससुराल कनखल पधारे हों। देवों की नगरी हरिद्वार—माँ गंगा, माता सती, ऋषियों और परम पूज्य गुरुदेव व परम वंदनीया माताजी की तप-साधना की कर्मभूमि—उस दिन अलौकिक आध्यात्मिक आभा से आलोकित दिखाई दी। पीत वस्त्रों में सजे परिजनों को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो देवताओं का समूह धरती पर अवतरित हो गया हो।

ज्योति कलश यात्रा के दौरान छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश एवं पूर्वोत्तर राज्यों से आए आदिवासी एवं वनवासी भाई-बहनों ने भारत की प्राचीन लोक कलाओं और लोक संस्कृतियों का जीवंत प्रदर्शन किया। वहीं उत्तराखंड, महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार और उत्तर प्रदेश से आए परिजनों ने भारत की धार्मिक एवं आध्यात्मिक विरासत को दर्शाती भव्य झांकियों से यात्रा को और भी दिव्य स्वरूप प्रदान किया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पंड्या जी ने लाल मशाल अंकित केसरिया पताका दिखाकर ज्योति कलश यात्रा को विधिवत रवाना किया। इस शोभायात्रा में विश्व के अनेक देशों से आए प्रतिनिधियों की उल्लेखनीय सहभागिता रही। फ़िजी, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, क़तर, कुवैत, ओमान, बहरीन, ब्रिटेन, बाल्टिक देश, जापान, अमेरिका, रूस, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, नेपाल, युगांडा, केन्या, तंजानिया सहित पूर्वी अफ्रीका के देशों से आए प्रतिनिधि अपने-अपने राष्ट्रीय ध्वजों के साथ यात्रा में सम्मिलित हुए।

इसके साथ ही भारत के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से आए प्रतिनिधियों की सहभागिता ने इस यात्रा को राष्ट्रव्यापी स्वरूप प्रदान किया। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक, हिमालय से समुद्र-तटों तक और मरुस्थलों से हरित मैदानों तक की सहभागिता ने ज्योति कलश यात्रा को सांस्कृतिक एकात्मता, सामाजिक समरसता और अंतरराष्ट्रीय सौहार्द का जीवंत उदाहरण बना दिया।

सम्पूर्ण वैरागी द्वीप श्रद्धा, उल्लास और युग-परिवर्तन के संकल्प से ओत-प्रोत रहा। यह अनुभूति गहराती गई कि ज्योति कलश यात्रा आने वाले समय में नवचेतना, नवसंस्कार और नव निर्माण का सशक्त आधार बनेगी तथा युगऋषि के विचारों को वैश्विक मानवता तक पहुँचाने का सुदृढ़ माध्यम सिद्ध होगी।

शर्मा जी एवं अखण्ड

CCTV
CONTROL ROOM
CCTV कण्ट्रोल रूम
IT
DEPARTMENT
DATA
CENTER
विदेश कार्यालय ABROAD OFFICE

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।
जन्म सताब्दी समारोह 2026
कार्यक्रम 20 जनवरी से 23 जनवरी
राजगीर कुण्ड का जल, नालन्दा विश्व विद्यालय की माटी
जल-रज
बैरागी दीप यात्रा समारोह
नालान्दा से हरिद्वार
अखिल विश्व गायत्री परिवार, नालन्दा

सुरक्षा नियंत्रण कक्ष

शताब्दी समारोह
2026
अखिल विश्व गायत्री परिवार
शांतिकुंज हरिद्वार
आदिवासी सम्मेलन
कर्मा नृतक दल
अखिल विश्व गायत्री परिवार
शाखा ग्राम- बिलडेगी
वि.ख.- पत्थलगाँव
जिला-जशपुर (छ.ग.)

नगर
अग्निशमन

शताब्दी समारोह
2026
अखिल विश्व गायत्री परिवार
शांतिकुंज हरिद्वार
आदिवासी सम्मेलन
कर्मा नृतक दल
अखिल विश्व गायत्री परिवार
शाखा ग्राम- बिलडेगी
वि.ख.- पत्थलगाँव
जिला-जशपुर (छ.ग.)

शताब्दी समारोह

2026
भगवती देवी
अखण्ड दीप
www.awgp.org

अनुदान काउन्टर
Donation Counter

CCTV
CONTROL ROOM
CCTV कन्ट्रोल रूम
IT
DEPARTMENT
DATA
CENTER

अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
1926
2026
शान्तिकुञ्ज हरिद्वार
जन्म शताब्दी
1926
शताब्दी समारोह

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी

शताब्दी समारोह 2026

शताब्दी समारोह 2026
100
स्वामी हरिचेतनानंद जी

परम वन्दनीया माता भगवती देवी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
MALLICK
MALLICK
MALLICK
Mallick Musical Co.

परम श्रद्धेया शैल जीजी

शताब्दी समारोह 2026

जन्मशताब्दी समारोह 2026: सांस्कृतिक संध्या में लोक कलाओं, संस्कारों और साधना का अनुपम संगम

January 21, 2026

शांतिकुंज में आयोजित जन्मशताब्दी समारोह 2026 के अंतर्गत चल रहे विविध आयोजनों की श्रृंखला में 20 जनवरी 2026 की सांस्कृतिक संध्या श्रद्धा, साधना और भारतीय सांस्कृतिक वैभव का जीवंत उदाहरण बनी। एक ओर दिनभर अनुभवजन्य विशिष्ट मूर्धन्यों की पावन वाणी से ज्ञान की अजस्र धारा प्रवाहित होती रही, वहीं संध्यावेला में पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माता जी की प्रेरणाओं से अनुप्राणित शिष्य-साधकों, बच्चों और युवाओं ने मंच पर भारत की विविध लोक एवं शास्त्रीय कलाओं की मनोहारी प्रस्तुतियाँ दीं।

सांस्कृतिक संध्या का शुभारंभ गायत्री परिवार की विशिष्ट गायन परंपरा प्रज्ञा गीत से हुआ। गायत्री विद्यापीठ के बच्चों ने “गुरु सत्ता का मिला हमें जो प्यार है, बंधा उसी से गायत्री परिवार” गीत की भावपूर्ण प्रस्तुति देकर संपूर्ण वातावरण को श्रद्धा और भावुकता से भर दिया। यह प्रस्तुति शांतिकुंज महिला मंडल की प्रमुख आदरणीया श्रीमती शेफाली पंड्या दीदी के प्रवचन से पूर्व हुई, जिसने कार्यक्रम में उपस्थित हजारों परिजनों को भावविभोर कर दिया।

इसके पश्चात देव संस्कृति विश्वविद्यालय की पूर्व छात्रा कुमारी स्वास्तिका जायसवाल ने भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं एवं

कालिया नाग मर्दन की गाथा का भरतनाट्यम शैली में अत्यंत सशक्त और सौंदर्यपूर्ण मंचन किया। उनकी भावाभिनय एवं नृत्य-लय ने दर्शकों को भक्ति रस में सराबोर कर दिया। इसके बाद देव संस्कृति विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रों द्वारा प्रस्तुत युवा जागरण विषयक प्रज्ञा गीत ने युवाओं में राष्ट्र, संस्कृति और चरित्र निर्माण का संदेश दिया।

कार्यक्रम की अगली प्रस्तुति में गायत्री धाम सेंधवा के नौनिहालों ने भगवान सदाशिव के तांडव नृत्य को एक नए भावबोध के साथ प्रस्तुत किया। जहाँ सामान्यतः तांडव को प्रलय का प्रतीक माना जाता है, वहीं बच्चों ने अपने नृत्य के माध्यम से ध्वंस के साथ सृजन, रौद्रता के साथ करुणा तथा शिव विवाह के मधुर भावों का अद्भुत संतुलन दर्शाया, जिसे दर्शकों ने करतल ध्वनि से सराहा।

सांस्कृतिक संध्या का एक अत्यंत मार्मिक क्षण तब आया जब गायत्री विद्यापीठ शांतिकुंज के बालक-बालिकाओं ने पूज्य गुरुदेव की किशोरावस्था में अछूत महिला छपको, जो कोढ़ रोग से पीड़ित थी, की सेवा से जुड़ी प्रेरक घटना का मंचन किया। “मानव मात्र एक समान, एक पिता की सब संतान” के संदेश को जीवंत करती इस प्रस्तुति ने उपस्थित हजारों परिजनों की आँखें नम कर दीं और बच्चों के प्रयास को सार्थक सिद्ध किया।

छत्तीसगढ़ के वनवासी अंचलों में युगनिर्माण योजना की अलख जगा रही मातृस्वरूपा कार्यकर्ता बहनों ने वंदनीया माता जी की जन्मशताब्दी के पावन अवसर पर लोक संगीत एवं लोक नृत्य के माध्यम से छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोक संस्कृति का सजीव मंचन कर

भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उनकी प्रस्तुति में सेवा, समर्पण और सांस्कृतिक चेतना की स्पष्ट झलक दिखाई दी।

संध्या की अंतिम कड़ी में भारत की प्राचीन, कठिन एवं साहसिक विधा मलखंभ का प्रदर्शन गायत्री धाम सेंधवा के विद्यार्थियों द्वारा किया गया। छोटे-छोटे विद्यार्थियों ने शारीरिक संतुलन, मानसिक दृढ़ता और आत्मविश्वास के अद्भुत समन्वय के साथ जिस कुशलता से मलखंभ कला का प्रदर्शन किया, वह दर्शकों के लिए अत्यंत प्रेरणास्पद रहा।

कार्यक्रम के समापन पर सांस्कृतिक संध्या में सहभागिता निभाने वाले सभी कलाकार बालक-बालिकाओं, युवाओं तथा मातृशक्ति को आदरणीया शेफाली पंड्या दीदी द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। संपूर्ण सांस्कृतिक संध्या भारतीय संस्कृति, मानवीय मूल्यों और युग निर्माण के संदेश से ओतप्रोत रही।

अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
1926

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

अखण्ड
2026

परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

अखण्ड दीप शताब्दी वष

1926
2026

पर्यावरण एवं वातावरण
शुद्धि संकल्प
शताब्दी समारोह 2026
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
100
1926-2026

पर्यावरण एवं
शुद्धि

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
1926
2026

परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

महिला मण्डल की प्रमुख आदरणीया शेफाली पंड्या दीदी ने विशाल जनसमूह को किया संबोधितः

दिनांक 20 जनवरी 2026 को आयोजित ज्योति कलश शोभायात्रा की अपूर्व एवं अतुलनीय छटाओं के दर्शन के पश्चात संध्या वेला में वैरागी द्वीप शताब्दी नगर में एकत्रित विशाल जनसमुदाय को शांतिकुंज महिला मंडल की प्रमुख आदरणीया शेफाली पंड्या दीदी ने संबोधित किया।

अपने भावपूर्ण संबोधन में आदरणीया दीदी ने कहा कि परम वंदनीया माता जी के व्यक्तित्व में ममता, करुणा, सेवा, समर्पण और साहस जैसे सभी गुण समाहित थे। इसके साथ ही माता जी स्वयं अद्वितीय नेतृत्व क्षमता और संगठनकर्ता का ऐसा उदाहरण थीं, जो अन्यत्र दुर्लभ है। शेफाली दीदी ने कहा कि सृष्टि के दो प्रमुख आधार हैं—ज्ञान और संवेदना। ज्ञान में प्रखरता होती है और संवेदना श्रद्धा, सजलता को जन्म देती है। जब तक ज्ञान और श्रद्धा का समन्वय नहीं होता, तब तक जीवन में समग्रता संभव नहीं है।

आदरणीया दीदी ने कहा कि प्रखर ज्ञान के प्रतीक परम पूज्य गुरुदेव हैं, जबकि सजल संवेदना की प्रतिमूर्ति वंदनीया माता जी हैं। उन्होंने गुरुदेव के कथन का उल्लेख करते हुए कहा- "यह गायत्री परिवार केवल मेरी तप-साधना से नहीं बना है, बल्कि परम वंदनीया माता जी ने इसे अपने प्रेम, आत्मीयता और करुणा से सींच-सींचकर खड़ा किया है।"

अपने उद्बोधन में आदरणीया दीदी ने शपथ समारोह से जुड़ा एक प्रेरक प्रसंग साझा करते हुए वंदनीया माता जी की संवेदनशीलता

और करुणा को उजागर किया। उन्होंने बताया कि शपथ समारोह की तैयारियों के दौरान एक स्थान पर निवास कर रहे विषैले जीवों से माता जी ने स्नेहपूर्वक वहाँ से चले जाने को कहा। कार्यकर्ताओं से चर्चा करते हुए माता जी ने कहा कि अब वहाँ किसी को कोई कठिनाई नहीं होगी। इस पर एक व्यक्ति द्वारा यह कहे जाने पर कि साँप-बिच्छुओं को मारा भी जा सकता है, माता जी अत्यंत गंभीर एवं क्रुद्ध हो गईं और कहा—"तुम उनके घर में घुसकर उनका आश्रय नष्ट कर रहे हो और फिर उन्हें मारने की बात करते हो? तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि मैं केवल तुम लोगों की ही माता हूँ? मैं इस जीव-जगत के समस्त प्राणियों की माता हूँ।"

आदरणीया दीदी के इन भावपूर्ण वचनों ने वहाँ उपस्थित हजारों परिजनों को वंदनीया माता जी की करुणामयी स्मृतियों से भावविह्वल कर दिया और अनेक नेत्र सजल हो उठे।

इसके पश्चात सांस्कृतिक संध्या में बालक-बालिकाओं एवं नारी शक्ति द्वारा दी गई प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए आदरणीया शेफाली पंड्या दीदी ने सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया।

परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

शताब्दी समारोह 2026

शताब्दी समारोह
शुद्धि संकल्प
100

जन्म शताब्दी समारोह–2026 के अंतर्गत पर्यावरण एवं वातावरण शुद्धि संकल्प कार्यक्रम संपन्न:

January 22, 2026
हरिद्वार

अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा आयोजित जन्म शताब्दी समारोह–2026 के अंतर्गत दिनांक 21 जनवरी 2026 को पर्यावरण एवं वातावरण शुद्धि संकल्प कार्यक्रम का भव्य एवं प्रेरणादायी आयोजन संपन्न हुआ। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण, जल एवं नदी शुद्धि जैसे विषयों पर गहन चिंतन एवं ठोस संकल्प लिए गए।

कार्यक्रम का शुभारंभ शांतिकुंज के विद्वान ऋत्विजों द्वारा वेदों में वर्णित पर्यावरण सूक्त के सामूहिक पाठ से हुआ। वेदमंत्रों के उच्चारण से संपूर्ण शताब्दी नगर आध्यात्मिक ऊर्जा से गुंजायमान हो उठा और वातावरण पवित्र भावनाओं से ओतप्रोत हो गया।

इसके पश्चात पर्यावरण संवर्धन अभियान के अंतर्गत अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा देश-विदेश में किए गए पर्यावरणीय कार्यों एवं उपलब्धियों पर आधारित एक प्रेरक डॉक्यूमेंट्री फिल्म का प्रसारण किया गया, जिसने उपस्थित जनसमूह को भावविभोर कर दिया।

पर्यावरण संकट पर चिंता, समाधान की ओर प्रेरणा

मंचीय कार्यक्रम में श्री मनु गौड़ जी, सदस्य, रणनीतिक सलाहकार समिति, माननीय मुख्यमंत्री, उत्तराखंड ने कहा कि आज पर्यावरण की स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आदरणीय डॉ. चिन्मय पंड्या जी के नेतृत्व में अखिल विश्व गायत्री

परिवार जन-जन के भीतर पर्यावरण संरक्षण की चेतना जागृत करेगा और समाज को सकारात्मक दिशा देगा।

स्वामी विश्वेश्वरानंद गिरी जी, संत एवं आध्यात्मिक मार्गदर्शक, अध्यक्ष, सूरत बांग्लागिरी ने कहा कि यह एक अद्भुत संयोग है कि एक ओर हम एक महान विभूति की जन्मशताब्दी मना रहे हैं और दूसरी ओर माँ धरती की रक्षा का संकल्प भी ले रहे हैं। यह आयोजन आध्यात्मिकता और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व का सुंदर संगम है।

वृक्ष ही पर्यावरण संरक्षण का सबसे सशक्त माध्यम

स्वामी अवधेशानंद गिरि जी, आचार्य महामंडलेश्वर एवं अध्यक्ष, जूना अखाड़ा ने कहा कि जिस भारत भूमि में वृक्षों की पूजा की जाती है और उन्हें देवतुल्य माना जाता है, उसी देश में पिछले 50 वर्षों में विश्व के किसी भी अन्य देश की तुलना में सर्वाधिक वृक्षों की कटाई हुई है। उन्होंने कहा कि यदि पर्यावरण को बचाना है तो वृक्ष ही सबसे सशक्त माध्यम हैं, और यह कार्य गायत्री परिवार प्रभावी ढंग से कर सकता है।

उन्होंने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि आप वही समर्थ कार्यकर्ता हैं जो समुद्र मंथन में इंद्र के साथ थे, सेतु निर्माण में भगवान राम के साथ थे और गिरिराज पर्वत उठाने में भगवान कृष्ण के साथ थे। यह प्रेरक उद्बोधन उपस्थित जनसमूह में नई ऊर्जा का संचार कर गया।

गायत्री परिवार का दशकों से सतत पर्यावरणीय प्रयासः

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए आदरणीय डॉ. चिन्मय पंड्या जी, दलनायक, जन्म शताब्दी समारोह–2026, अखिल विश्व गायत्री परिवार ने कहा कि आज जिस विषय पर हम यहाँ एकत्रित हुए हैं, वह संपूर्ण मानवता के अस्तित्व से जुड़ा हुआ है। जल की उपलब्धता निरंतर कम हो रही है और जो जल उपलब्ध है, वह भी विषाक्त होता

जा रहा है। वायु प्रदूषण की भयावह स्थिति का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि दिल्ली में रहने वाले एक 8 वर्षीय बच्चे के फेफड़ों की स्थिति 20 वर्षों से धूम्रपान करने वाले व्यक्ति के समान पाई गई है।

उन्होंने बताया कि गायत्री परिवार ने इस संकट को दशकों पूर्व ही पहचान लिया था और उसी समय से समाधान की दिशा में कार्य आरंभ कर दिया था। श्रद्धेय गुरुदेव के एक उद्बोधन से प्रेरित होकर कोलकाता गायत्री परिवार के यूथ ग्रुप ने प्रति सप्ताह वृक्षारोपण का संकल्प लिया। इससे प्रेरणा लेकर पटना, दिल्ली, भोपाल सहित देश के अनेक नगरों में वृक्षारोपण अभियान प्रारंभ हुए, जो आज कुल मिलाकर 20 हजार सप्ताह का सतत प्रयास बन चुके हैं।

अब तक गायत्री परिवार द्वारा 75 लाख से अधिक वृक्षों का रोपण तथा 12 नदियों का शुद्धिकरण किया जा चुका है, जो अपने आप में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।

766 जिलों में उपवन निर्माण का संकल्प

डॉ. चिन्मय पंड्या जी ने बताया कि आज लिए गए संकल्पों के अंतर्गत भारत के सभी 766 जिलों में परम वंदनीया माताजी के नाम से एक-एक उपवन का निर्माण, हजारों वृक्षों का रोपण, एक तीर्थ शुद्धि, एक सरोवर शुद्धि तथा कम से कम एक नदी शुद्धि का संकल्प लेकर सभी प्रतिनिधि अपने-अपने क्षेत्रों में लौटेंगे।

पूज्य गुरुदेव के विचारों का वैश्विक प्रभाव

योग गुरु स्वामी रामदेव जी, संस्थापक, पतंजलि योगपीठ ने कहा कि समस्त ईश्वरीय ज्ञान को लोकभाषा में संसार के करोड़ों लोगों तक पहुँचाने का प्रचंड पुरुषार्थ यदि किसी ने किया है, तो वे पूज्य आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा जी हैं। उन्होंने कहा कि जब भी उन्हें

अवसर मिलता है, वे पूज्य गुरुदेव की वाणी का श्रवण करते हैं, जिससे उन्हें दिव्य ऊर्जा की अनुभूति होती है।
उन्होंने कहा कि आज विश्व के कोने-कोने में गायत्री के साधक सक्रिय हैं। जिनके रोम-रोम में धरती माता, वेद माता और भारत माता समाई हुई हैं, वही हमारे पूज्य आचार्य श्री हैं।

गणमान्य अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति

इस अवसर पर श्री भूपेंद्र कैंथोला जी, प्रधान महानिदेशक (पूर्व क्षेत्र), पीआईबी, कोलकाता; श्री रमणकांत जी, संस्थापक, भारतीय नदी परिषद; श्री दयाशंकर जी, परिवहन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), उत्तर प्रदेश; श्री मदन कौशिक जी, माननीय विधायक, हरिद्वार; श्री गोपाल आर्य जी, राष्ट्रीय संयोजक, आरएसएस पर्यावरण विभाग; श्री किशोर उपाध्याय जी, संरक्षक, उत्तराखंड देवभूमि जन कल्याण संगठन सहित अनेक गणमान्य विभूतियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

तरु-पूजन एवं पौध वितरण के साथ समापन

कार्यक्रम के समापन अवसर पर आमंत्रित संतों एवं गणमान्य अतिथियों द्वारा तरु-पूजन किया गया। इसके साथ ही देशभर से पधारे सभी जिलों के प्रतिनिधियों को प्रतीकात्मक रूप से एक-एक आंवले का पौधा वितरित किया गया, ताकि पर्यावरण संरक्षण का यह संकल्प धरातल पर साकार हो सके।

आदरणीय डॉ० चिन्मय पण्ड्या जी
स्वामी रामदेव जी

शताब्दी समारोह 2026

परम वन्दनीया मा
शताब्दी समारोह
पर्यावरण एवं वातावर
शुद्धि संकल्प
100
1926-2026
परम वन्दनीया
माता भगवती देवी शर्मा जी
अखण्ड दीप शताब्दी व

शताब्दी समारोह 2026

परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

आदरणीय डॉ० चिन्मय पण्ड्या जी
स्वामी रामदेव जी
स्वामी अवधेशानंद

स्वामी अवधेशानंद गिरि जी

पर्यावरण संरक्षण के साथ युग-निर्माण का स्पष्ट संदेश, शताब्दी समारोह के सांयकालीन सत्र में राष्ट्रीय नेतृत्व का प्रेरक संवाद:

January 22, 2026
हरिद्वार।
परम् वंदनीया माताजी एवं अखण्ड दीपक शताब्दी समारोह के क्रम में आयोजित *पर्यावरण एवं वातावरण शुद्धि संकल्प* का द्वितीय सत्र आज गरिमामयी एवं प्रेरणादायी वातावरण में संपन्न हुआ। समाज, शासन, कृषि, अध्यात्म एवं विचार-जगत से जुड़े प्रतिष्ठित अतिथियों की उपस्थिति ने इस सत्र को व्यापक दृष्टि, स्पष्ट दिशा और राष्ट्रीय महत्व प्रदान किया।

शताब्दी समारोह के दलनायक एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पंड्या जी ने अपने उद्बोधन में युग-निर्माण के पाँच मूल सूत्र—*उपासना, साधना, आराधना, समयदान एवं अंशदान*—को विस्तारपूर्वक प्रतिपादित किया। उन्होंने कहा कि पर्यावरण शुद्धि का वास्तविक आधार बाह्य प्रयासों के साथ-साथ अंतःकरण की शुद्धता है। उपासना चेतना को जाग्रत करती है, साधना व्यक्तित्व को सुदृढ़ बनाती है, आराधना समाज के प्रति उत्तरदायित्व का बोध कराती है, जबकि समयदान और अंशदान युग-परिवर्तन के व्यावहारिक माध्यम हैं। जब व्यक्ति, परिवार और समाज—तीनों स्तरों पर शुद्धता का संकल्प दृढ़ होता है, तभी स्थायी पर्यावरणीय परिवर्तन संभव होता है।

इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ल जी, माननीय केंद्रीय जनजातीय कार्य राज्य मंत्री श्री दुर्गा दास उइके जी, दीनदयाल संस्थान के अध्यक्ष डॉ. अतुल जैन जी, पद्मश्री सम्मानित प्रगतिशील कृषक एवं कृषि नवाचारक श्री राम शरण वर्मा जी (बाराबंकी), जर्मनी से सांसद एवं जेएफडब्ल्यू के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राहुल कुमार जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख श्री रामलाल जी, दिव्य प्रेम सेवा मिशन के अध्यक्ष डॉ. आशीष गौतम जी तथा 'पाञ्चजन्य' के मुख्य संपादक श्री हितेश शंकर जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। सभी वक्ताओं ने अपने-अपने विचारों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण को जीवन-शैली, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रीय कर्तव्य से जोड़ने का आह्वान किया।

सम्पूर्ण सत्र में यह संदेश स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आया कि शताब्दी समारोह केवल उत्सव या आयोजन मात्र नहीं है, बल्कि युग-निर्माण के लिए चेतना, चरित्र और कर्म—तीनों स्तरों पर सक्रिय सहभागिता का सशक्त आह्वान है। पर्यावरण शुद्धि, सामाजिक समरसता और नैतिक उत्थान—ये सभी एक-दूसरे से अविभाज्य हैं।

कार्यक्रम के समापन पर *सप्तसंकल्प पाठ* के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण एवं युग-निर्माण के संकल्प को सामूहिक चेतना में दृढ़ता के साथ प्रतिष्ठित किया गया। इस संकल्प के साथ प्रतिभागियों ने व्यक्तिगत जीवन में सकारात्मक परिवर्तन और समाज के लिए सक्रिय योगदान का दृढ़ निश्चय व्यक्त किया।

परम वन्दनीया

शताब्दी समारोह 2026

Shri Rahul Kumar

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

श्री अतुल जैन
आदरणीय श्री हितेश शंकर

आदरणीय श्री शिव प्रताप शुक्ल जी
आदरणीय श्री दुर्गादास उइके जी
श्री आशीष गौतम

आदरणीय श्री दिनेश शंकर
आदरणीय डॉ० चिन्मय पण्ड्या जी
आदरणीय श्री शिव प्रताप शुक्ल जी

शताब्दी समारोह
पर्यावरण एवं वातावरण
शुद्धि संकल्प

पर्यावरण
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
1926
2026
जन्म शताब्दी

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
शताब्दी वर्ष

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

Shri Rahul Kumar
2026

शांतिकुंज हरिद्वार

तपोभूमि मथुरा

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
शांतिकुंज हरिद्वार

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

शताब्दी समारोह 2026
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

शांतिकुंज में राष्ट्र-जागरण का विराट आयोजन, अमित शाह का संबोधन:

23 जनवरी , 2026

हरिद्वार स्थित शांतिकुंज में परम वंदनीया माताजी एवं दिव्य अखंड दीपक के शताब्दी वर्ष के पावन अवसर पर आयोजित *'राष्ट्र के जागरण का समय आ गया'* कार्यक्रम राष्ट्र को समर्पित एक विराट चेतना-महोत्सव के रूप में सम्पन्न हुआ। यह आयोजन देवसंस्कृति दिग्विजय अभियान से जुड़े गायत्री परिवार के लाखों कार्यकर्ताओं के लिए संकल्प, प्रेरणा और क्रियाशीलता का महापर्व बना, जहाँ राष्ट्र-जागरण का स्वर अपने शिखर पर दिखाई दिया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भारत के माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह एवं उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी का शांतिकुंज आगमन हुआ। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पंड्या ने पुष्पगुच्छ भेंट कर अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। इसके पश्चात मुख्य अतिथियों ने गायत्री परिवार के प्रमुख द्वय श्रद्धेय डॉ. प्रणव पंड्या एवं श्रद्धेया शैल जीजी से भेंट कर दिव्य अखंड दीप के दर्शन किए। इस अवसर पर श्रद्धेयद्वय द्वारा रुद्राक्ष माला, गंगाजल एवं गायत्री मंत्र-चादर भेंट कर अतिथियों का सम्मान किया गया।

अपने उद्बोधन में गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि युगद्रष्टा पं. श्रीराम शर्मा आचार्य और वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा ने अपने एक ही नश्वर जीवन में असंख्य जीवनों को दिशा देने का अद्भुत कार्य किया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि *"भारतवर्ष कभी भी*

गुरुदेव के उपकारों से मुक्त नहीं हो सकता।" गुरुदेव का जीवन, साधना और विचार राष्ट्र के नैतिक व आध्यात्मिक उत्थान की सुदृढ़ आधारशिला हैं।

श्री शाह ने कहा कि अखंड ज्योति सम्मेलन में आकर वे अखंड ऊर्जा और चेतना का अनुभव कर रहे हैं। उन्होंने देव संस्कृति विश्वविद्यालय और डॉ. चिन्मय पंड्या के नेतृत्व की सराहना करते हुए कहा कि गुरुदेव के विचार, कर्म और साधना की ऊर्जा आज भी करोड़ों लोगों के हृदय में आत्मा के दीपक के रूप में प्रज्वलित है। वर्षों बाद भी अखंड ज्योति का निरंतर जलते रहना इसी चेतना का प्रमाण है।

1926
2026
राष्ट्र के जागरण
समय आ गया
100 YEARS
1926-2026
परम वन्दनीया
माता भगवती देवी शर्मा

राष्ट्र के जागरण क
समय आ ग
शताब्दी समारोह 20
परम वन्दनीया माता भगवती देवी
अखण्ड दीप शताब्दी व
1926 2026
शताब्दी समारोह
राष्ट्र के जागरण क
समय आ गया

शताब्दी समारोह 2026
100
1926 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी एवं अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
अखिल विश्व गायत्री परिवार शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
यो नः प्रचोदयात्

1926 2026
जन्म शताब्दी
शताब्दी समारोह
राष्ट्र के जागरण का

परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी
एवं
अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष

1926 2026
जन्म शताब्दी
1926 2026
शताब्दी समारोह
राष्ट्र के जागरण का
समय आ गया

1926 2026
जन्म शताब्दी
शताब्दी समारोह
राष्ट्र के जागरण क
समय आ गया
100 YEARS
1926-2026
परम वन्दनीया
माता भगवती देवी शर्मा जी
अखण्ड दीप शताब्दी

डेढ़ लाख दीपों की ज्योति से आलोकित हुआ शताब्दी समारोह स्थल:

22 जनवरी,2026

वैरागी द्वीप स्थित शताब्दी समारोह स्थल मंगलवार की सांय बेला उस समय दिव्य प्रकाश से जगमगा उठा, जब अखण्ड दीपक से प्रज्वलित डेढ़ लाख दीपकों और सौ से अधिक मशालों ने संपूर्ण परिसर को युग-चेतना के प्रकाश से भर दिया। दृश्य ऐसा था मानो आस्था, साधना और राष्ट्रचेतना एक साथ साकार हो उठी हो।

पीतवस्त्रधारी साधकों की सुसंगठित पंक्तियाँ, हाथों में प्रज्वलित मशालें और अनुशासित मौन—यह सब मिलकर एक ऐसे विराट दीप महायज्ञ का साक्ष्य बने, जिसे देखने के लिए विशाल पंडाल में उपस्थित हजारों श्रद्धालु भाव-विभोर दिखाई दिए।

अखण्ड ज्योति की यात्रा बनी आकर्षण का केंद्र:

इस अवसर पर शांतिकुंज में विगत सौ वर्षों से निरंतर प्रज्वलित अखण्ड दीपक को आदरणीया श्रद्धेया जिजी द्वारा विधिवत रूप से वैरागी कैंप एवं शताब्दी समारोह स्थल तक लाया गया। उसी अखण्ड ज्योति से दीप महायज्ञ का शुभारंभ हुआ। जैसे ही पहली मशाल प्रज्वलित हुई, पूरा पंडाल जयघोष और श्रद्धा की निस्तब्धता से गूंज उठा।

अंतरराष्ट्रीय सहभागिता, मौन साधना में लीन श्रद्धालु:

दीप महायज्ञ के दौरान देश-विदेश से आए श्रद्धालु भी दीप प्रज्वलन करते दिखाई दिए। हाथ जोड़े, नेत्र बंद किए साधकों की साधना यह दर्शा रही थी कि यह आयोजन केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और संकल्प का क्षण है। महिलाओं, युवाओं और वरिष्ठ साधकों की समान सहभागिता ने आयोजन को और भी गरिमामय बना दिया।

गुरुदेव–माताजी के चित्रों के समक्ष श्रद्धा अर्पण:

दीप महायज्ञ से पूर्व परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी एवं परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी के चित्रों के समक्ष विधिवत श्रद्धा अर्पण किया गया। दीप, पुष्प और मंत्रोच्चार के साथ वातावरण पूर्णतः आध्यात्मिक हो उठा। यह दृश्य साधना, त्याग और तप की अखण्ड परंपरा का प्रतीक बना।

नेतृत्व की गरिमामयी उपस्थिति:

इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने जन्मशताब्दी समारोह के दलनायक एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पंड्या जी, साथ ही आदरणीया शैफाली जिजी। उनके नेतृत्व में संपन्न हुआ यह दीप महायज्ञ युग-निर्माण, संस्कार जागरण और राष्ट्रहित के प्रति सामूहिक संकल्प का जीवंत प्रतीक बनकर उभरा।

प्रकाश से संकल्प तक:

दीप महायज्ञ का यह दृश्य केवल प्रकाश का आयोजन नहीं था, बल्कि यह संदेश था कि जब विचार, चरित्र और कर्म शुद्ध होते हैं, तभी समाज और राष्ट्र का नव निर्माण संभव होता है। अखण्ड दीपक

से प्रज्वलित प्रत्येक दीपक आने वाले युग के लिए आशा, चेतना और परिवर्तन का प्रतीक बन गया।

पुरुष शौचालय

शताब्दी समारोह 2026

जन्म शताब्दी वर्ष 2026

प्रखर-प्रज्ञा
सजल-श्रद्धा

OUR ONLINE
SERVICES

बीड़ी पीकर खाँस रहा है।
मौत के आगे नाच रहा है॥
यदि सुख से चाहे जीना।
कभी भूल से नशा न करना॥
शताब्दी समारोह विशेषांक
प्रज्ञा अभियान
ज्ञानयज्ञ

परम श्रद्धेया शैल जीजी

परम

1926 2026
हम बदलेंगे
बदलेगा
हम सुधरेंगे

SONALI

2026
आदरणीय डॉ० चिन्मय पण्ड्या जी

शताब्दी समारोह 2026

परम

बसंत पंचमी पर अखण्ड ज्योति के सान्निध्य में सामूहिक साधना—श्रद्धा, संकल्प और आशीर्वाद का अद्वितीय संगम:

23 जनवरी, हरिद्वार

बसंत पंचमी का पावन प्रभात शताब्दी समारोह 2026 के लिए एक दिव्य अनुभूति बनकर अवतरित हुआ—जहाँ ऋतुराज बसंत की कोमलता, साधना की गंभीरता और युग-परिवर्तन का संकल्प एकाकार हो गया।

इस पवित्र अवसर पर परम् आदरणीया श्रद्धेया जिजी, जन्मशताब्दी के दलनायक एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पंड्या जी तथा आदरणीया शैफाली जिजी द्वारा शांतिकुंज में विगत 100 वर्षों से सतत प्रज्वलित अखण्ड दीपक को विधिपूर्वक लाकर वैरागी कैंप स्थित शताब्दी समारोह स्थल पर स्थापित किया गया। अखण्ड ज्योति की यह स्थापना मानो परम पूज्य गुरुदेव की सजीव उपस्थिति का अनुभव करा रही थी।

अखण्ड दीपक के सान्निध्य में सभी श्रद्धालुओं एवं गायत्री परिजनों ने एक स्वर में 108 बार गायत्री महामंत्र का सामूहिक जप किया। मंत्रोच्चार से गुंजायमान वातावरण में प्रत्येक हृदय में शांति, चेतना और आत्मबल का संचार स्पष्ट अनुभूत हुआ।

साधना के उपरांत प्रत्येक श्रद्धालु को परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की चरण-पादुका के दर्शन एवं आशीर्वाद का

सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह क्षण अनेक साधकों के लिए जीवन की अमूल्य स्मृति बन गया।

इस पावन अवसर पर आदरणीया श्रद्धेया जिजी के करकमलों से सभी को परम वंदनीया माताजी द्वारा लिखित संकल्प—

“या तो अभी, या कभी नहीं” का प्रसाद प्राप्त हुआ। यह केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि जीवन को साधना, सेवा और युग-निर्माण के लिए समर्पित करने का जाग्रत आह्वान बनकर प्रत्येक हृदय में अंकित हो गया।

बसंत पंचमी का यह दिन शताब्दी समारोह के अंतर्गत श्रद्धा से संकल्प, साधना से संकल्पना और आशीर्वाद से युग-निर्माण की ओर बढ़ते कदमों का दिव्य साक्ष्य बना।

अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष
1926 2026
शान्तिकुञ्ज-हरिद्वार
माघ शुक्ल पञ्चमी, संवत्-2082 (23 जनवरी 2026)
वसन्त पर्व
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा
जन्म शताब्दी
1926 2026
शताब्दी समारोह 2026

वसन्त पर्व

परम वन्दनीया माता
एवं
अखण्ड दीप

अखण्ड दीप एवं शताब्दी वर्ष

शताब्दी समारोह 2026
परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी

माघ शुक्ल पञ्चमी, संवत्-2082 (23 जनवरी 2026)
वसन्त पर्व

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी का विशेष उद्बोधन

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री
(भारत सरकार)

गायत्री परिवार द्वारा आयोजित शताब्दी समारोह में सम्बोधन कार्यक्रम
हरिद्वार (उत्तराखंड), 22 जनवरी 2026 लिंक

मेरे साथ दोनों हाथ उठा कर तन्मयता के साथ भारत माता का जयकारा लगाएंगे। भारत माता की जय! मंच पर उपस्थित आज के कार्यक्रम के उत्सव मूर्ति दलनायक जन्म शताब्दी समारोह श्रीमान डॉक्टर चिन्मय पंड्या जी, हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम शिव प्रताप शुक्ला जी, मेरे परम मित्र और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्रीमान पुष्कर सिंह धामी जी, भारतीय जनता पार्टी उत्तराखंड के प्रदेश अध्यक्ष श्रीमान महेंद्र भट्ट जी, भाजपा के वरिष्ठ नेता श्रीमान मदन कौशिक जी, उत्तर प्रदेश के परिवहन मंत्री श्रीमान दयाशंकर सिंह जी और आज इस पंडाल में और आभासी रूप से ऑनलाइन जुड़े हुए गायत्री परिवार के सभी भक्त जनों को मेरा प्रणाम। राम राम।

मित्रों, यहां पर एक प्रकार से गायत्री परिवार के शताब्दी वर्ष का कार्यक्रम है। अखंड ज्योति के प्रागट्य के 100 साल हुए। वंदनीय माता भगवती देवी शर्मा के धरती पर अवतरण के भी 100 साल हुए

और गुरुदेव पंडित राम शर्मा जी की तपस्या के भी 100 साल पूरे हुए। व्यक्ति के लिए 100 साल का जीवन एक प्रकार से पूर्णता माना जाता है। परंतु व्यक्ति निर्माण और पुनर्जागरण के लिए जो संस्थाएं काम करती है इनके लिए 100 साल शैशव काल होता है। नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ने का काल होता है। आज करोड़ों लोगों को गायत्री मंत्र के साथ, गायत्री उपासना के साथ, गायत्री साधना के साथ पंडित राम शर्मा ने जोड़ा। वो करोड़ों लोगों की जिम्मेदारी है कि चिन्मय भाई के नेतृत्व में 100 साल में नई ऊर्जा और जोश के साथ हम आगे बढ़े। इस तरह से आगे बढ़े, इस उत्साह से आगे बढ़े कि यही तपोभूमि पर यही सप्त ऋषियों की भूमि पर यही कुंभ भूमि पर गायत्री परिवार के 200 साल भी इससे भी ज्यादा उत्साह के साथ मनाएंगे और आज जो राष्ट्र निर्माण का संकल्प का दिन तय किया है मैं आपको बाद में बात करूंगा परंतु राष्ट्र निर्माण का संकल्प ये आज कितना समयोचित है इसकी भी मैं बात में बात करूंगा, परंतु मैं पंडित राम शर्मा के जीवन पर बात करना चाहता हूं। देश भर के इतिहास का देश के महापुरुषों का और आध्यात्मिक जीवन को ऊर्जा लेने वाले अनेक संतों के जीवन का मेरा गहरा अध्ययन है। मैं आज गायत्री परिवार के कार्यक्रम में आया हूं इसलिए नहीं कह रहा हूं। गायत्री परिवार की अखंड ज्योति की शताब्दी है इसलिए नहीं कह रहा हूं। मेरे मन की मान्यता है भारतवर्ष पंडित राम शर्मा के उपकारों से कभी मुक्त नहीं हो पाएगा। एक जीवन में करोड़ों लोगों को व्यक्ति निर्माण के आंदोलन के साथ जोड़ना, भक्ति के साथ जोड़ना, आध्यात्म के रास्ते पर प्रशस्त करना और गायत्री मंत्र का एक प्रकार से पुनर्जीवन करने का काम करना। सनातन धर्म में कई कुरीतियां आ गई। बहनें गायत्री मंत्र नहीं बोल सकती। क्यों नहीं बोल सकती? किसी के पास जवाब नहीं था। और ये कुरिती को

तोड़ने का काम पंडित राम शर्मा ने किया। हर जाति, हर समाज और लिंग भेद के बगैर गायत्री मंत्र के माध्यम से हर आत्मा को कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने का रास्ता पंडित गायत्री शर्मा ने किया। पंडित राम शर्मा जी ने मदन मोहन मालवीय ने जो उनको सीख दी थी कि गायत्री मंत्र के ज्ञान को जनजन तक पहुंचाओ उसको अपना जीवन मंत्र कर दिया। वसंत पंचमी के दिन ही अखंड ज्योति का प्रागट्य हुआ और फिर मथुरा की पुण्य भूमि से एक कुंभ क्षेत्र में गुरुदेव उसको लेकर आए और उन्होंने पूरा जीवन इसको समर्पित कर दिया। 1971 में इस पुण्य भूमि पर ज्योति का प्रागट्य हुआ। शांति कुंज की स्थापना हुई और गुरुदेव ने जो रास्ता बताया जो करोड़ों लोगों ने उस रास्ते पर चलना प्रशस्त किया। युग कोई धर्म नहीं बदल सकता। युग कोई धर्माचार्य भी नहीं बदल सकता। युग कोई फिलॉसोफी नहीं बदल सकती। इन्होंने एक सूत्र दिया,बड़ा सरल सूत्र दिया, मैं मानता हूं उस सूत्र ने पूरे भारत को रास्ता दिखाया। उन्होंने कहा हम बदलेंगे युग बदलेगा। जब तक व्यक्ति नहीं बदलता है, राष्ट्र भी नहीं बदलता है, समय भी नहीं बदलता है। युग बदलने का तो सवाल ही नहीं है। हर व्यक्ति को अच्छा व्यक्ति बनना, हर व्यक्ति को आध्यात्म के रास्ते पर जाना, अगर हर व्यक्ति आध्यात्म के रास्ते पर चल पड़ता है तो युग का परिवर्तन अपने आप हो जाता है। देखिए साहब देखते देखते देखते इतने सालों के कम समय में 15 करोड़ परिवार इस आंदोलन के साथ जुड़ गए। उन्होंने धर्म को कर्मकांड के आवरण से निकालकर वैज्ञानिक अध्यात्म के साथ जोड़ने का काम गुरुदेव ने किया। हम बदलेंगे युग बदलेगा और गायत्री मंत्र ये दोनों के बीच में गहरा रिश्ता है। गायत्री मंत्र संस्कृत में रचा गया एक मंत्र मात्र नहीं है। हमारे यहां सनातन धर्म में कल्पना है कि देव और दानव दोनों हमारे शरीर के अंदर बसते हैं। गायत्री मंत्र

के 24 अक्षर जो है वह 24 सद ग्रंथियों को झंकृत करते हैं। जब आप आपकी नाभि से गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हो वो 24 अक्षर तप, दान, वीरता, धैर्य, तेज, तपस ये सारे गुणों को पोषित करने वाली ग्रंथि को झंकृत करते हैं। और पद्मासन के अंदर नाभि से बोला गया गायत्री मंत्र हमारे अंदर की सद ग्रंथियों को झंकृत कर कर एक्टिवेट करता है और उसके साथ ही इसकी विरोधाभासी जो ग्रंथि है जिसको हमारे शास्त्रों ने असुर का कहा तप के सामने उपभोग है, वीरता के सामने कायरता है, दान के सामने लोभ है, वो 24 ग्रंथियों का शमन भी करता है और सद ग्रंथियों को उत्तेजित भी करता है। अगर हर व्यक्ति के अंदर ये 24 गुण गायत्री मंत्र के उच्चारण से बढ़ते हैं और साधक जब आगे बढ़ता है तो अपने आप सारे आवरण हटते जाते हैं। तो हम बदलेंगे का जो नारा है इसको उन्होंने गायत्री मंत्र के साथ जोड़ा। हम कैसे बदलेंगे? हमारी वृत्तियों को बदलेंगे। हमारे गुणों को बदलेंगे। सद्गुणों का विकास करेंगे और खराब गुणों का धीरे धीरे धीरे ह्रास कर कर हम आध्यात्म को जागृत कर कर आगे के रास्ते पर निकलेंगे। यह वैज्ञानिक आधार देने का काम पंडित राम शर्मा जी ने किया, गायत्री मंत्र की रचना समग्र पृथ्वी पर बसते मानवों के कल्याण के लिए की गई। मगर धीरे-धीरे वो कर्मकांड बनकर रह गया था। पंडित राम शर्मा ने गायत्री मंत्र को वैज्ञानिक आधार देकर नई ऊर्जा देने का काम किया। जो युवा मेरा भाषण सुन रहे हैं उनको मैं कहना चाहता हूं मुझे भी मेरे गुरु जी ने जब गायत्री मंत्र का अर्थ समझाया और उसका उच्चारण करने की पद्धति समझाई उसके बाद में मेरी सोच मेरे व्यक्तित्व मेरी बुद्धि और मेरे आत्मा की गति में बहुत बड़ा परिवर्तन आया। आप एक बार मन से प्रयोग कर कर देखिए पंडित शर्मा के आशीर्वाद प्राप्त कर कर स्वार्थ छूटता जाएगा, परमार्थ बढ़ता जाएगा, कायरता

निकलती जाएगी, हिंसा बगैर की वीरता अपना स्थान ले लेगी और बुद्धि सदमार्ग पर प्रवृत्त हो जाएगी और ये अखंड ज्योति बिना किसी विज्ञापन के बिना बिना किसी बाहरी सहायता से 100 से अधिक भाषाओं में करोड़ों लोगों के पास पहुंचती है। ये पंडित राम शर्मा और वंदनीय माता जी की एक प्रकार से तपस्या का परिणाम है। बचपन से देशभक्त रहे। आजादी के लिए संघर्ष किया। नमक सत्याग्रह में अंग्रेजों की लाठियां भी खाई और आजादी के बाद समाज में पनपी हुई कुरीतियों के खिलाफ पंडित राम शर्मा ने आंदोलन छेड़ा। जातपात की बेड़ियों को तोड़ी, समाज को बराबरी का रास्ता दिखाया और महिलाओं को गायत्री मंत्र की उपासना करने का अधिकार दिया। आज यहां पहला दिन था। उस वक्त चिन्मई जी ने आदिवासी भाइयों को यहां बुलाया था। इससे बड़ा काम चिन्मय जी कोई नहीं। आपने बहुत अच्छा किया और एक प्रकार से पंडित राम शर्मा के रास्तों को आप आगे ले जाने का काम किया। कई सारी कुरीतियां उन्होंने दहेज हटाएंगे ऐसा नहीं कहा। मेरी बात ध्यान से सुनिएगा। दहेज नहीं लेंगे नहीं कहा। उन्होंने नेगेटिविटी नहीं करी। दहेज मुक्त विवाह को हम अपनाएंगे ऐसा कहा। रचनात्मक दृष्टि से दूषणों को बाहर किया। व्यसन से मुक्ति प्राप्त करने का अभियान चलाया। गंगा सफाई का अभियान चलाया। और वृक्षारोपण भी आज चिन्मन भाई ने मुझे गाड़ी में बताया कि हर जिले में 1 लाख वृक्ष वाले बोने का जो अभियान लिया है वो पर्यावरण की इससे बड़ी कोई सेवा नहीं और ये जो उन्होंने सूत्र दिया अपने आप को सुधारना संसार की सबसे बड़ी सेवा है। वो सूत्र कई सारे लोगों के जीवन ने प्रकाश को भरा है। देश पर जब संकट आता है चाहे गायत्री परिवार का कोई भी व्यक्ति हो ,बाढ़ हो, भूकंप हो या महामारी हो सेवा करने वाली संस्थाओं की सूची दिखते हैं तो

गायत्री परिवार उसमें हमेशा आगे रहता है। मुट्ठी भर अन्न और समय दान वो देश भर के समाज के उत्थान के लिए काम करने वाला जो संगठन है उनके लिए अनुकरणीय सूत्र बन गए। मुट्ठी अन्न का संकल्प उसने संस्थाओं को किसी धनपति या किसी धन्नासेठों से मुक्त कर दिया और समय दान इसने कोई प्रचार के बगैर मुख सेवा कर कर विचार को घर-घर पहुंचाने वाले कार्यकर्ताओं की फौज खड़ी। जब 1990 में आचार्य श्री ने शरीर को त्यागा तब सबके मन में एक विचार आया था कि अब क्या होगा ये आंदोलन का और अद्भुत ऊर्जा के साथ माता जी ने 15 लाख लोगों के बीच में घोषणा की ये मिशन देव द्वारा संचालित मिशन है, यह रुकेगा नहीं और तेजी से बढ़ेगा। माता जी ने इसको आगे बढ़ाया। फिर प्रणव भाई और अब चिन्मय जी। ये मिशन देव द्वारा संचालित मिशन है। वो अपने आप में आत्मविश्वास तभी आता है जब मिशनों के उद्देश्यों के मिशन के उद्देश्यों के बारे में संपूर्ण स्पष्ट था। उन्होंने बलि बगर के अश्वमेघ को किया चित्रकूट में और 1008 कुंड में 10 लाख लोगों ने अपने व्यसन की बलि चढ़ाने का काम किया। और जब से सनातन धर्म शुरू हुआ तब से अपने आप में एक ऐसा पहला अश्वमेघ यज्ञ था जिसमें लोगों ने अपने व्यसनों की बलि चढ़ाई।

आज मैं देवभूमि उत्तराखंड में आया हूं, देवभूमि में पैर रखते ही हजारों हजारों साल की तपस्या की ऊर्जा का अनुभव होता है। देवभूमि में भी मैं हरिद्वार में आया हूं, यह कुंभ क्षेत्र है। सप्त ऋषियों की तपस्व तपस्या की भूमि है। अनगिनत संतों ने यहां अपने आत्मा के साथ-साथ करोड़ों लोगों की आत्मा को जागृत कर कर आध्यात्म के रास्ते पर प्रशस्त करने का पुरुषार्थ इसी भूमि पर किया है। यही

भूमि पर पंडित राम शर्मा और वंदनीय माता जी ने गायत्री ऊर्जा को जागृत करने का काम किया है। आज अखंड ज्योति सम्मेलन में आकर मैं साच अर्थ में अखंड ऊर्जा और चेतना की अनुभूति कर रहा हूं। यह मेरा मन ही जानता है यहां से कितनी चेतना लेकर मैं वापस जाऊंगा। आस्था, आध्यात्म और संस्कृति ये तीनों का ये संगम स्थल है। पूजनीय पंडित जी ने, श्री राम शर्मा जी ने आस्था, आध्यात्म और संस्कृति ये तीनों को पुनर्जीवित करने के लिए व्यक्ति निर्माण का रास्ता चुना। हर व्यक्ति के अंदर बसे हुए परमात्मा रूपी आत्मा को जागरूक और ऊर्जावान करने का काम किया। आज मैं तो चिन्मय जी को अभिनंदन देना चाहता हूं, बहुत-बहुत अभिनंदन देना चाहता हूं। चारों सम्मेलनों का थीम उनका बड़ा प्रशंसनीय है। परंतु आज उन्होंने राष्ट्र निर्माण का संकल्प का जो काम लिया है वो साच अर्थ में बहुत पसंद है। मित्रों जो लोग सनातन धर्म को जानते हैं, भारतीय संस्कृति को जानते हैं, भारत के इतिहास को जानते हैं, वो सभी को सिर्फ मान्यता नहीं दृढ़ विश्वास है कि विश्व भर की समस्याओं का समाधान अगर कहीं एक जगह है तो भारतीय परंपरा में विश्व भर की समस्याओं का समाधान है, तो आध्यात्मिक रूप से भारत का पुनर्निर्माण वो सिर्फ भारत के लिए नहीं समग्र विश्व के लिए कल्याणकारी होने वाला है। कई सारे अर्थ द्दष्टाओं ने स्वामी विवेकानंद जी हो, महर्षि अरविंद हो, या पूजनीय पंडित राम शर्मा जी, ये सब ने अपनी ओजस्वी वाणी में विश्वास व्यक्त किया है कि जब भारत अपने पूर्ण तेज के साथ जागृत होगा समग्र विश्व को समग्र ब्रह्मांड को तेजोमय बनाएगा और मुझे विश्वास है ऐसी मनिषियों की ऐसे आर्य द्दष्टाओं की वाणी कभी विफल नहीं जाती है। उनके मुख से जो सत्य वचन निकले हैं, इसको हम सब ने ब्रह्मा के वचन मानकर ही आगे बढ़ना पड़ेगा और विश्वास के साथ आगे बढ़ना। पंडित राम

शर्मा ने भक्ति को मंदिर के गर्भ गुरु से निकालकर लोगों के मुंह तक जीहवा तक, आत्मा तक पहुंचाने का काम किया गायत्री मंत्र के माध्यम से। ये आज जो विशाल समागम दिख पड़ा है, सातों नगरों में भी आभासी स्वरूप से इसको गायत्री परिवार के सभी लोग देख रहे हैं और देश और विश्व भर में देख रहे हैं। इतना बड़ा भक्तों का समूह एक जीवन में सृजित करना इससे बड़ा कोई काम नहीं हुआ। युग दृष्टा पंडित श्री राम शर्मा आचार्य और वंदनीय माता भगवती देवी ये दोनों ने अनेक जीवनों का काम अनेक युगों का काम अपने एक ही नश्वर देह के समय में कर कर दिखाया। एक ऐसा वट वृक्ष बनाया जो वटवृक्ष की छांव में 100 से अधिक देशों में 15 करोड़ से ज्यादा अनुयायी आज आध्यात्म के मार्ग पर,अपने आत्मा के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। और आज ये अखंड ज्योति की सती मनाई जा रही है। आप कल्पना करिए 1925-26 से लेकर 2026 तक एक ही मार्ग पर एक ही ध्येय के साथ एक ही लक्ष्य के साथ ना केवल एक व्यक्ति ना केवल एक विचार करोड़ों लोगों को साथ में लेकर आगे बढ़ना कितनी ऊर्जा होगी पंडित जी के जीवन में उनके विचार में उनके कर्मों में कि उनके जाने के इतने वर्षों बाद भी अखंड ज्योति ना केवल जलती रही। करोड़ों लोगों के दिल में आत्मा के दीपक के रूप में वो अखंड ज्योति ने स्थान दे दिया। ये 1925-26 का साल ये साच अर्थ में राष्ट्रीय पुनर्जागरण का साल रहा। उसी वर्ष राष्ट्रीय स्वयंसेवक की संघ की स्थापना हुई और संघ भी आज जन्मशती मना रहा है। उसी वक्त भाई जी ने गीता प्रेस गोरखपुर की स्थापना की वो भी आज जन्मशती मना रहा है। और अखंड ज्योति जो प्रज्वलित हुई और वंदनीय माता जी का भी जन्मशती का वर्ष है। एक प्रकार से यह सभी काम एक ही वर्ष में शुरू होने का मतलब है कि वह वर्ष को ईश्वर ने ही भारत के पुनर्जागरण के लिए निर्मित

किया होगा। मैं आज पंडित राम शर्मा जी ने गायत्री परिवार की परंपरा की जो स्थापना की महामना मदन मोहन मालवीय का जिस आंदोलन को आशीर्वाद मिले वह आंदोलन वो परंपरा और उसका भाग स्वरूप आप सभी को मन पूर्वक प्रणाम करता हूं।

मित्रों, यह जो आंदोलन चला है इसने सनातन धर्म को वैज्ञानिकता देने का काम किया। पंडित राम शर्मा ने कहा धर्म और विज्ञान एक दूसरे के पूरक है। एक दूसरे के विरोधी नहीं है। और सनातन धर्म और विज्ञान तो एक दूसरे के पूरक ही है। जिनको धर्म का ज्ञान नहीं है वो उसको अंधश्रद्धा मानते हैं। जिसको धर्म का ज्ञान है, वह जरूर इसको वैज्ञानिक रूप एसेस कर पाता है। आध्यात्म को तर्क की कसौटी पर कसने की पहली बार शुरुआत पंडित राम शर्मा ने की और यहां ब्रह्म वर्चस्व शोध संस्थान की स्थापना भी की। वैज्ञानिक आध्यात्मवाद ये आधुनिक भारत में देने का संपूर्ण श्रेय किसी एक व्यक्ति को जाता है तो पंडित राम शर्मा के हाथ में जाता है। मैं आया था देव संस्कृति विद्यालय में। मेरा भाषण रखा था प्रणव जी ने। मुझे तो आश्चर्य हुआ। एक हाथ में वेद और दूसरे हाथ में लैपटॉप लिए हुए युवाओं को जब मैंने देखा तो मन एक अनेक प्रकार की शांति से निश्चिंत हो गया। जब इस देश का युवा वेद, उपनिषद और पुराणों को आगे बढ़ाता है और साथ में विज्ञान का भी आधार रहता है तो हम जरूर आगे बढ़ेंगे।

मित्रों, अभी-अभी कुछ साल पहले हमारे देश की आजादी की 75 साल 75वीं वर्षगांठ मनाई गई। 75वीं वर्षगांठ के वक्त नरेंद्र मोदी जी ने कई प्रकार से उसको मनाने का संकल्प किया। उस वक्त

आजादी के आंदोलन का इतिहास इस देश के किशोर और युवाओं के सामने रखने का काम किया। एक-एक गांव में जो आजादी के आंदोलन लड़ने वाले स्वतंत्र सेनानी थे उसको ढूंढ-ढूंढ कर उनका महिमा मंडन करने का काम किया। आजादी से अब तक 75 साल तक देश ने जिन जिन क्षेत्रों में विकास किया है उसको भी पूरे देश के सामने रखकर गौरव भरने का काम किया। मगर तीसरा काम बड़ा महत्वपूर्ण था। उन्होंने आजादी के 75व वर्ष में अमृत काल की घोषणा की। क्या है अमृत काल? अमृतकाल आजादी के 75 वर्ष से 100 साल तक की यात्रा है। उन्होंने एक संकल्प इस देश की जनता के 130 करोड़ की जनता के लिए घोषित किया कि हम सब भारतीय मिलकर जब आजादी की शताब्दी मनाई जाएगी। 15 अगस्त 2047 को एक ऐसे भारत की रचना करेंगे जो हर एक क्षेत्र में विश्व में सर्वप्रथम होगा। ऐसे भारत के और एक पूर्ण विकसित परंतु भौतिकता से योजनों दूर आध्यात्मिकता के रास्ते पर आगे बढ़ता हुआ भारत की रचना की संकल्पना नरेंद्र मोदी जी ने की और देखते देखते एक संकल्प देश के 140 करोड़ लोगों का संकल्प बना।

मित्रों, कॉलेज में ये संकल्प पर वक्तव्य देने का एक बच्ची खड़ी हो गई। इन्होंने कहा आपको लगता है क्या हमारे संकल्प लेने से देश आगे बढ़ जाएगा? तब मैंने उसको कहा था एक व्यक्ति जब एक कदम उठाता है तो एक ही कदम उठता है। 140 करोड़ लोग एक दिशा में एक कर कदम उठाते हैं तो 140 कदम देश आगे बढ़ता है। 140 करोड़ कदम देश आगे और इस संकल्प को समाज सेवी संस्थाओं की मदद के बगैर पूरा नहीं किया जा सकता। आज मैं गायत्री परिवार के मंच पर आया हूं। हमारे युवा नेता चिन्मय जी को

भी कहना चाहता हूं। ये संकल्प जो है ये भारत का संकल्प है। पूर्ण विकसित भारत बनाने का। भारत माता को सर्वोच्च स्थान पर विराजमान करने का यह संकल्प गायत्री परिवार का भी संकल्प। पंडित राम शर्मा जी ने जो व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण व्यक्ति निर्माण से युग निर्माण इसकी संकल्पना रखी है हर नागरिक को हम ऐसे भारत के निर्माण की संकल्पना के साथ जोड़ दें और स्वामी विवेकानंद जी को चिन्मय जी ने क्वोट किया विवेकानंद जी ने एक बार कहा था कि सारे सारे देवी देवताओं के मंदिर कुछ समय कर बंद कर कर उसमें भारत माता की मूर्ति को प्रस्थापित कर कर हम भारत माता की आराधना तो गायत्री मंत्र से हमारे अंदर जो सदवत्तियों की वृद्धि होती है। एक चेतना जागृत होती है। आध्यात्म के रास्ते पर हम प्रशस्त होते हैं। ये सभी ऊर्जा चेतना का उपयोग हम ऐसे भारत की रचना करने के लिए बनाएं जो भारत न केवल अपना समग्र ब्रह्मांड के कल्याण की कल्पना के साथ पूरे विश्व की कल्पना के लिए कल्याण के लिए आगे बढ़े।

मित्रों, आज मैं आप सभी को बताना चाहता हूं इस 10 वर्ष के अंदर देश में काफी परिवर्तन हो गए। वर्षों से जिसकी राह देखते थे 500 साल से रामलल्ला अपमानित अवस्था में बैठे थे वहां आज अयोध्या में भव्य मंदिर का निर्माण हो गया। औरंगजेब ने तोड़ा हुआ काशी विश्वनाथ कॉरिडोर आज फिर से बन चुका है। 16 बार टूटने के बाद आज सोमनाथ का मंदिर ददीप्यमान होकर सनातन की भगवी ध्वजा को शिखर तक पहुंचा। धारा 370 हट चुकी है। देश कॉमन सिविल कोड के रास्ते पर आगे बढ़ चुका है। आज एक जमाने में हिंदुत्व की बात करने में भी लोग झिझकते थे। आज गर्व से हमारी

संस्कृति और हमारे धर्म की बात करते हैं। मैं तो आज आया हूं गायत्री परिवार के मंच पर, ऐसे राष्ट्र के निर्माण में गायत्री परिवार भी लगे। व्यक्ति निर्माण से समाज निर्माण और व्यक्ति के परिवर्तन से युग परिवर्तन का जो नारा पंडित राम शर्मा ने दिया वो 130 करोड़ भारतीयों का नारा बने और हम सर्वोच्च स्थान पर बैठे हुई भारत माता को अपने जीवन काल में देख पाए। मैं फिर से एक बार पंडित राम शर्मा, वंदनीय माता जी, डॉक्टर प्रणव जी और अब डॉक्टर चिन्मय जी ने ये जो ऊर्जा का प्रवाह प्रवाहित किया है उसको वंदन कर कर बहुत-बहुत साधुवाद देता हूं और फिर से एक बार मैं आप सभी से विनती करा करूंगा कि दोनों हाथ उठाकर एक बार भारत माता का जयकारा लगाएं। मेरे साथ बोलिए, बोलिए प्रचंड आवाज से, भारत माता की जय! भारत माता की जय! वंदे मातरम! वंदे मातरम! बहुत-बहुत धन्यवाद और मैं देर से आया हूं इसलिए आप सभी का क्षमा प्रार्थी हूँ।

आदरणीय

1926
2026
जन्म शताब्दी
शताब्दी समारोह
राष्ट्र के जागरण का

शताब्दी
समारोह
2026
100
1926
2026
यो नः प्रचोदयात्

1926
2026
राष्ट्र के जागरण
समय आ गया
100
YEARS
1926-2026
परम वन्दनीया
माता भगवती देवी शर्मा